TITLE CODE : UPMUL00792

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर, शनिवार 14 जनवरी 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :1, अंक :44 पृष्ठ :8, मूल्य 2 रुपये

संक्षेप

पूर्व केन्द्रीय मंत्री शरद यादव का निधन

नई दिल्ली एजेंसी। पूर्व केन्द्रीय मंत्री व जेडीयू के पूर्व अध्यक्ष शरद यादव का निधन हो गया है। 75 साल की उम्र में शरद यादव ने अंतिम सांस ली। बिहार की राजनीति में अपनी अलग पहचान रखने वाले शरद यादव का जाना सभी को दुखी कर गया है। उनकी समाजवाद वाली राजनीति ने उन्हें जनता के बीच लोकप्रिय बना दिया था लेकिन अब उस महान नेता ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया है।

गुरुग्राम के फोर्टिस अस्पताल में उनका निधन हुआ है। उनकी बेटी ने इस खबर की पुष्टि की।

नए साल में दूसरा झटका, आठ बैंकों के कर्ज हुए महंगे, फरवरी में एक बार फिर ब्याज दरें बढ़ने की संभावना

नई दिल्ली एजेंसी। नए साल में लोन लेने वालों के लिए बुरा अनुभव रहा है। जनवरी के अब तक के 14 दिनों में 8 बैंकों ने कर्ज महंगा कर दिया है। इससे सभी तरह के कर्ज पर ब्याज दरें ज्यादा हो गई हैं। इसी के साथ फरवरी में एक बार फिर से लोगों को झटका लग सकता है, क्योंकि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) रेपो दर में एक बार और वृद्धि कर सकता है। एक बड़े सरकारी बैंक के अधिकारी ने बताया, दिसंबर में रेपो दर 0.35 फीसदी बढ़कर 6.25 फीसदी के स्तर पर पहुंच गई थी।

उस समय भी बैंकों ने ब्याज दरें बढ़ाई थीं और अब भी उसी आधार पर दरें बढ़ रही हैं। इसमें कर्ज और जमा दोनों पर दरें बढ़ी हैं। हालांकि, फरवरी में 0.25 फीसदी फिर से दरों के बढ़ने की उम्मीद है और इस आधार पर बैंक एक बार और कर्ज महंगा कर सकते हैं।

चीन में एक माह में कोरोना से 60 हजार मौतें

नई दिल्ली एजेंसी। चीन में कोरोना संक्रमण बेकाबू हो चुका है। यहां कोरोना के कारण बीते तीस दिनों में करीब 60 हजार लोगों की मौत हुई है। इसकी पुष्टि खुद चीन ने की है। चीन ने काफी आलोचना के बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ कोरोना के आंकड़ों को साझा किया है। चीन के इस कदम की विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक डॉ. टेड्रोस एडनॉम घेब्रेयसस ने सराहना की है।

वाराणसी से दुनिया का सबसे लंबे क्रूज को पीएम नरेंद्र मोदी ने किया रवाना

नई दिल्ली एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्चुअली वाराणसी से दुनिया के सबसे लंबे रिवर क्रूज एमवी गंगा विलास को रवाना किया। काशी से बोगीबील तक 3200 किलोमीटर की रोमांचक यात्रा पर इस क्रूज में स्विट्जरलैंड के 32 पर्यटक शामिल रहेंगे। रवानगी के मौके पर यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी वाराणसी के रविदास घाट पर मौजूद रहे।

रिवर क्रूज एमवी गंगा विलास उत्तर प्रदेश के वाराणसी से चलकर असम के डिब्रूगढ़ पहुंचेगा। 51 दिनों में 3,200 किलोमीटर नदी मार्ग और 27 नदी प्रणालियों को पार करके यह क्रूज भारत के अलग–अलग राज्यों से होते हुए बांग्लादेश के रास्ते 1 मार्च 2023 को असम के डिब्रूगढ़ पहुंचेगा। पोर्ट, शिपिंग और वाटरवेज के एक अधिकारी ने एएनआई को बताया कि दुनिया का सबसे लंबा रिवर क्रूज एमवी गंगा विलास भारत में बनने वाला पहला क्रूज पोत है। यह रिवर क्रूज सेक्टर में आत्मनिर्भर भारत का प्रतीक है।

गंगा विलास 18 सुइट्स समेत सुविधाओं से लैस एक लक्जरी क्रूज है। क्रूज में संगीत, सांस्कृतिक कार्यक्रम, जिम, स्पा, ओपन–एयर ऑब्जर्वेशन डेक, पर्सनलाइज्ड बटलर सर्विस जैसी सुविधाएं मौजूद हैं। क्रूज में तीन डेक हैं। बोर्ड पर 36 पर्यटकों की क्षमता के साथ सभी लक्जरी सुविधाएं मौजूद हैं। इस दौरान केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने कहा, "आज का दिन दुनिया की रिवर क्रूज के इतिहास में लिखा जाएगा क्योंकि ये दुनिया का सबसे लंबा सफर होगा। इस सफर के जरिए सिर्फ पर्यटन का ही रास्ता नहीं बल्कि व्यापार का भी रास्ता खुलेगा।"

उत्तर प्रदेश के 'अन्नदाता' अब बनेंगे 'ऊर्जादाता'

फसल ही नहीं, अब बिजली भी उपजाएंगे यूपी के किसान...योगी सरकार ने तैयार की योजना

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अन्नदाता किसानों को ऊर्जादाता किसानों के रूप में भी विकसित करने का निर्णय लिया है। सीएम योगी की योजना को यूपी पावर कॉरपोरेशन (यूपीपीसीएल) ने कुसुम योजना के माध्यम से 6 जिलों में लागू करने का निर्णय लिया है। निजी विकास कर्ताओं (किसानों) के साथ 7 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन की परियोजनाओं पर पावर परचेज एग्रीमेंट किया गया है। इसके तहत किसान अपनी बंजर जमीन पर सौर ऊर्जा उत्पादन केंद्र की स्थापना करेंगे। इसमें विभिन्न बैंक उनकी मदद करेंगे। सरकार भी इसमें सब्सिडी प्रदान करेगी। इस सौर ऊर्जा उत्पादन केंद्र के माध्यम से पैदा होने वाली बिजली को किसान सरकार या निजी बिजली कंपनियों को बेचकर अपनी आमदनी बढ़ा सकेंगे।

योजना के तहत बिजनौर, हाथरस, महोबा, जालौन, देवरिया तथा लखनऊ में सौर ऊर्जा उत्पादन केंद्र की स्थापना की जाएगी।

उल्लेखनीय है कि इस योजना से किसानों को दो तरह के लाभ मिलेंगे। पहले पुराने डीजल सिंचाई पंप की जगह, वो सोलर पैनल से चलने वाले सिंचाई पंपों का प्रयोग कर पाएंगे। दूसरा उन्हें खेत में लगे सोलर प्लांट से उत्पन्न बिजली को बिजली कंपनियों को बेच कर एक्स्ट्रा आय के तौर पर सालाना एक अच्छी आय हो सकेगी। इस योजना के अंतर्गत किसान अपनी बंजर जमीनों पर सोलर पैनल लगाकर सौर ऊर्जा से बिजली बना सकते हैं तथा इसे विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी बिजली कंपनियों को बेचकर प्रतिमाह पैसा कमा सकते हैं। कुसुम योजना के अंतर्गत 1 मेगावाट का सोलर प्लांट लगाने के लिए 5 एकड़ जमीन की आवश्यकता होती है।

एक एशिया' के विचार को साकार करना हम सबकी जिम्मेदारी: प्रो. द्विवेदी

लोक पहल

नोएडा। सार्क देशों के पत्रकार संगठन 'सार्क जर्नलिस्ट फोरम' (एसजेएफ) के नोएडा में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान फोरम के एक प्रतिनिधिमंडल ने नोएडा स्थित भारतीय जन संचार संस्थान का दौरा किया। आईआईएमसी के महानिदेशक प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी ने नेपाल, भूटान, श्रीलंका और बांग्लादेश से आए तीस से अधिक प्रतिनिधियों का अंगवस्त्र और स्मृति चिन्ह देकर अभिनंदन किया। इस अवसर पर संस्थान के डीन (अकादमिक) प्रो. गोविंद सिंह, डीन छात्र (कल्याण) प्रो. प्रमोद कुमार, प्रोफेसर डॉ. स्मिता मिश्र, डॉ. मीता उज्जैन, डॉ. अनिरुद्ध सुधान्शू ,डॉ. पवन कौंडल, डॉ. प्रतिभा शर्मा एवं सहायक कुलसचिव ऋतेश पाठक भी उपस्थित रहे।

आईआईएमसी के महानिदेशक ने स्वामी विवेकानंद की जयंती पर उनका स्मरण करते हुए कहा कि वे पहले ऐसे विचारक थे, जिन्होंने एक एशिया की अवधारणा प्रस्तुत की। प्रो. द्विवेदी ने कहा कि जब 'एक एशिया' बनेगा, तभी इस क्षेत्र की शांति, अखंडता, विकास और समृद्धि को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि हम सबका एक ही इतिहास है और आज भी हम सब एक जैसी संस्कृति, खानपान, रहन–सहन साझा करते हैं। प्रो. द्विवेदी ने कहा कि आज हम 21वीं सदी में हैं और स्वामी विवेकानन्द की बातें सच होती नजर आ रही हैं। उन्होंने 'सार्क जर्नलिस्ट फोरम' का आह्वान करते हुए कहा कि पत्रकार होने के नाते 'एक एशिया' के विचार को साकार करना हम सबकी जिम्मेदारी है।

इस अवसर पर एसजेएफ के अध्यक्ष राजू लामा ने कहा कि आईआईएमसी में आकर वे

बेहद गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुझे भारत के बहुत सारे राजनेताओं और स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में जानकारी थी, लेकिन यह पहली बार है, जब उन्हें भारत के पहले हिंदी समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' के संस्थापक संपादक पंडित युगल किशोर शुक्ल के योगदान के बारे में पता चला। लामा ने कहा कि एसजेएफ, शुक्ल के पत्रकारिता में अविस्मरणीय योगदान के लिए उन्हें अपनी आदरांजलि अर्पित करता है। अपनी यात्रा के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने आईआईएमसी के विभिन्न विभागों, पुस्तकालय और संस्थान द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो 'अपना रेडियो 96.9 एफएम' का भी दौरा किया।

शिक्षक से समाज बहुत अपेक्षाएं : डा आजाद

एस एस कालेज में शिक्षा विभाग में परिचय कार्यक्रम का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। एक शिक्षक समाज का सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति होता है, शिक्षक से सम्पूर्ण समाज अपेक्षा करता है कि वह समाज का एक सच्चा, आदर्श एवं उच्च चरित्र वाला नागरिक हो एक आदर्श शिक्षक बनने के लिए हमें अपनी ऐसी बहुत सी मूल प्रवृत्तियों को त्यागना पड़ता है जिसे समाज स्वीकार नहीं करता है। यह विचार एसएस कालेज के प्राचार्य डॉ0 राकेश कुमार आजाद ने एमएड प्रशिक्षण के नवीन छात्र–छात्राओं के स्वागत एवं परिचय कार्यक्रम में व्यक्त किये। डॉ0 आजाद ने कहा कि एमएड में प्रवेश लेने के पश्चात्य अपने आप में गर्व की अनुभूति होनी चाहिए। कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती का पूजन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। डॉ0 प्रियंका शर्मा के निर्देशन में बीएड की छात्रायें प्रज्ञा श्रीवास्तव, गारिमा मिश्रा, एवं प्रिया ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। डॉ प्रभात शुक्ला ने एमएड पाठ्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की और विभाग की परमपराओं से अवगत कराया। संचालन कर रहे डॉ कृष्ण कुमार मिश्रा ने किया। विभागाध्यक्ष डॉ मीना शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप डॉ विनीत श्रीवास्तव, डॉ शैलजा मिश्रा, डॉ मनोज मिश्रा, डॉ साहुल शुक्ला, डॉ अखिलेश तिवारी, डॉ संजय कुमार, डॉ बृजनिवास, डॉ अमित गुप्ता, डॉ सौरभ मिश्रा, डॉ रोहित सिंह, डॉ राम औतार, डॉ राजीव यादव, डॉ प्रियंका शर्मा, डॉ नेहा कुमारी, डॉ रेनू बहुखण्डी आदि उपस्थित रहें।

रोटरी क्लब बांटेगा एक हजार 'स्वास्थ्य रक्षा कार्ड'

नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने किया विमोचन

लोक पहल ?

शाहजहांपुर। रोटरी क्लब शाहजहाँपुर के तत्वाधान में नगर निगम प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने 'स्वास्थ्य रक्षा कार्ड' का विमोचन किया। इस अवसर पर नगर निगम के लगभग 75 कर्मचारियों को कार्ड वितरित कर इसका शुभारंभ किया गया। रोटरी क्लब के अध्यक्ष समीर सक्सेना ने बताया कि आज के परिवेश में हर किसी को कभी न कभी रक्त की जांच करानी पड़ती है जो की आर्थिक रूप से अक्षम व्यक्ति को एक अनावश्यक बोझ की तरह लगती है। रोटरी क्लब ने इस स्वस्थ रक्षा कार्ड में दिए गए पैथोलॉजी पर 15 प्रतिशत की छूट जो की बिल मूल्य पर होगी का लाभ देने के लिए इसको आम जनता तक पहुँचने के उद्देश्य से इसको वितरित करने का बीड़ा उठाया है। क्लब ने फिलहाल एक हजार कार्ड वितरित करने का लक्ष्य इस माह में रखा है। मुख्य अतिथि नगर आयुक्त संतोष शर्मा रोटरी क्लब के इस पहल की सराहना की इस मौके पर अध्यक्ष समीर सक्सेना, सचिव अजय शर्मा, अतुल सक्सेना, सचिन अग्रवाल, नविन कपूर, गौरव कौशल, सुमनं चंद्र गुप्ता के साथ पैथोलॉजी के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए।

हम सबमें ब्रह्म नहीं बल्कि ब्रह्म में हम सब हैं : स्वामी चिन्मयानन्द

एसएस लॉ कालेज में ''राष्ट्र निर्माण में भारतीय युवाओं की भूमिका'' पर संगोष्ठी का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानन्द विधि महाविद्यालय में राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में ''राष्ट्र निर्माण में भारतीय युवाओं की भूमिका'' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।
इस मौके पर स्वामी चिन्मयानन्द ने कहा कि हम सब में ब्रम्ह नहीं है बल्कि ब्रम्ह में हम सब है। मैं और हम में एक सूक्ष्म अन्तर है जिन लोगों में विवेक और ज्ञान आ जाता है वह सब में हम देखते है। जबकि विवेक न होने पर मैं होता है। जब धर्म और धरती को अलग किया जाता है तो मैं और हम की सीमाएं पैदा कर देता है। अतः भारतीय संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों को युवा पीढ़ी द्वारा स्वामी विवेकानन्द की भाँति सम्पूर्ण विश्व में प्रचारित और प्रसारित करने चाहिए। जिससे सनातन धर्म के वैदिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकें।
मुख्य वक्ता डॉ0 आलोक कुमार सिंह ने कहा कि जब तक राष्ट्र का युवा संस्कारित, नियंत्रित और अनुशासित रहेगा तब तक वह सृजन करता रहेगा। राम सागर यादव ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द युवा संयासी और वैदान्तिक समाज के प्रवंतक थे। विशिष्ट वक्ता डॉ0 संध्या तरार ने कहा कि ईश्वर नश्वर नहीं और सभी जीवों में ईश्वर का वास है अर्थात शरीर का नाश होता है लेकिन व्यक्ति के विचार और उसका ज्ञान अनश्वर है। इस मौके पर डॉ0 अमीर सिंह, ईश पाल सिंह, प्रबल पाण्डेय, सारिका खान, अंकुर मिश्रा, अहद खान, अनामिका, अंकित गुप्ता, आशना अंजुम, शरद शर्मा, वंश दीप सिंह, दीपिका वर्मा, विलाल हसन आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।
लॉ कालेज के प्राचार्य डॉ0 जय शंकर ओझा ने आभार व्यक्त किया। संचालन डॉ0 दीप्ति गंगवार ने किया। इस दौरान डॉ0 अनिल कुमार, डॉ0 पवन कुमार गुप्ता, डॉ0 अमित कुमार यादव, अशोक कुमार, अरविन्द कुमार, सचिन कुमार, डॉ0 प्रेम सागर, अजीत यादव, मृदुल शुक्ला, अमरेन्द्र सिंह, प्रदीप कुमार सिंह, डॉ0 सुशील कुमार, गौरव गुप्ता, अमित सैनी, सुनील चौहान, शिव ओम शर्मा, रोहित कुमार, सर्वेश कुमार शर्मा, भानु, हरीश कुमार आदि मौजूद रहे।

जीएफ कालेज में इतिहास की वर्कशाप का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। गांधी फैजाम कालेज में उत्तर प्रदेश सरकार के यूपीएससी कोचिंग कार्यक्रम में इतिहास विषय की एक दिवसीय वर्कशॉप का आयोजन किया गया। प्रशिक्षक डॉ विकास खुराना ने कहा कि अब इतिहास का आधार धर्म से हट कर अर्थ पर केंद्रित हो गया है, इसी आर्थिक आधार पर इतिहास की घटनाओं का कार्य कारण संबंध ढूंढने का प्रयास किया जाता है। मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों की विवेचना करते हुए उन्होंने बताया कि शुरुआती इतिहासकार बस औरंगजेब आलमगीर को इसका जिम्मेदार मानते हुए प्रश्न से इति श्री कर लेते थे यूरोप पूर्णजागरण के फलस्वरूप तकनीकी के क्षेत्र में नित्य नए आयाम गढ़ रहा था, भारत में शेख अहमद सरहिंदी जैसे धर्म गुरु गणित और विज्ञान की शिक्षा के विरुद्ध थे जिसके कारण तोपखाने कभी सशक्त नही बन पाए। कोर्स कॉर्डिनेटर डॉ तारिक ने कहा कि 'यूपीएससी के लिए तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को यह समझ लेना चाहिए कि तुलनात्मक अध्ययन ही बेहतर विकल्प है और कड़ी परिश्रम कर टारगेट को साधा जा सकता है। सहायक कोर्स कार्डिनेटर डॉ स्वप्निल यादव ने बताया कि 'अभ्युदय कोचिंग के अंतर्गत विभिन्न विषयों की वर्कशाप का आयोजन समय समय पर किया जाता है ताकि संबंधित विषय के कांसेप्ट क्लियर हो सकें। वर्कशॉप में विद्यार्थियों के लिए एक प्रश्नकाल का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर दिव्यांशी मिश्रा, कमलेश अवस्थी, कामरान, अनमोल, हर्ष, संध्या, लविश इत्यादि अनेक छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

'यूनिटी' संस्था ने मेडिकल कालेज में मरीजों बांटे कंबल

लोक पहल

शाहजहांपुर। बीमारी से परेशान लोगों की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहने वाली संस्था 'यूनिटी' की महिलाएं कड़ाके की ठंड में संस्था की संरक्षक डा संगीता मोहन के नेतृत्व में मेडिकल कॉलेज के इमरजेंसी वार्ड, सर्जिकल वार्ड, महिला वार्ड और रैन बसेरा में भर्ती मरीजों को कंबल उपलब्ध कराकर भीषण ठंड से राहत दिलाने का काम किया। इस मौके पर संस्था की संरक्षक डा संगीता मोहन ने कहा कि संस्था समाज के हर जरुरतमंद की सेवा के लिए हमेशा तैयार रहती है, इस दौरान मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डा शैलेंद्र, डा एमपी गंगवार, डा श्वेता, संस्था की अध्यक्ष एकता अग्रवाल, राजुल टंडन, रचना, शैली गुप्ता, सोनिया गुप्ता, श्वेता आदि मौजूद रहीं।

नगर मजिस्ट्रेट की छापेमारी में भारी मात्रा में चाइनीज मांझा बरामद

लोक पहल

शाहजहँापुर। जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह के निर्देश पर नगर मजिस्ट्रेट अशीष कुमार सिंह ने कोतवाली सदर बाजार पुलिस के साथ एक दुकान में छापेमारी की। जिस दौरान भारी मात्रा में चाइनीज मांझा घर की छत से बरामद किया गया। पुलिस ने इसके विक्रय से संबंधित दो युवकों को भी हिरासत में लिया है, जिनके विरुद्ध विधिक कार्यवाही की जा रही है। नगर मजिस्ट्रेट ने कहा कि प्रतिबंधित चाइनीज मांझा अत्यंत खतरनाक होता है और इसके प्रयोग से अनेक घटनाएं होती हैं। कई लोग इसकी चपेट में आकर घायल भी हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि इस संबंध में प्रशासन को मिल रही शिकायतों के दृष्टिगत कार्यवाही की गयी है। नगर मजिस्ट्रेट ने लोगो से अपील भी की कि चाईनीज मांझे का कतई प्रयोग न करें और इसके विक्रय में संलिप्त लोगो की सूचना प्रशासन को देकर प्रशासन का सहयोग करें जिससे शीघ्र कार्यवाही की जा सके।

शायद मुझे तलाश कभी जिन्दगी करे

ओमप्रकाश अडिग : कवि कभी मरते नहीं

सुशील 'विचित्र'

शाहजहांपुर। वरिष्ठतम ओमप्रकाश अडिग के निधन से साहित्याकाश में जो स्थान रिक्त हुआ है उसे भरा नहीं जा सकता। इसलिए और भी नहीं कि उनकी जैसी साहित्य साधना दुर्लभ है, श्लाघनीय भी। जितने बड़े कवि थे उतने ही सरल व्यक्ति भी थे वे शाहजहांपुर के सबसे अधिक छपने वाले कवि थे बीते दिसंबर में ही उनके दो पत्रिकाओं में दो गीत छपे थे। 1960 से वे कहीं न कहीं बराबर प्रकाशित होते रहे। हिंदुस्तान साप्ताहिक, धर्मयुग, सारिका, कादम्बिनी, हंस, कथादेश, सरिता, माधुरी ऐसी पत्रिकाएं रहीं है जिनमें कभी छपना गर्व और गौरव की बात होती थे। दादा अडिग को यह गौरव हासिल था।

उनकी साहित्यिक यात्रा छह दशक से अधिक समय से चल रही थी। उनका पहला काव्य संकलन क्वारे गीत शायद 1978 या उसके आसपास प्रकशित हुआ था। पॉकेट बुक साइज का यह संकलन तब बहुत चर्चित हुआ था। इसके बाद उनके गीत साझा संकलन पीढ़ी बोल उठी में दिखाई दिए। कल्पतः, अश्वत्थ, संकुल, युद्ध के बाद समेत प्रकाशित कई गीत संकलन के आलावा प्रकाशन कृतियों से भी कहीं विस्तृत उनका रचना संसार विविधता से भरा हुआ है। जो बताता है कि गीत को गजल को उन्होंने जिया है। वैसे जिया तो उन्होंने साहित्य का भी एक युग है। शाहजहांपुर जनपद में कविता का खेत अगर रामाधीन सैनिक, दादा विकल और विद्रोही जी ने भले ही हमवार किया तो इसमें गीतों की फसल बोई दादा अडिग ने। नवोदितों को प्रश्रय और बढ़ावा दे कर उन्होंने कवि समाज की तो की ही साहित्य की भी बहुत सेवा की। उनका हर कवि साहित्यकार को एक ही उपदेश होता था कि रोज लिखो। कुछ भी लिखो लेकिन लिखो। यदि कोई गीत गजल कहानी नहीं उतर रही है तो किसी को काल्पनिक पत्र ही लिखो। जितना लिखोगे उतना ही मजोगे। जितना मजोगे उतना ही संवरोगे और जितना संवरोगे उतना ही चमकोगे। निसंदेह यह बहुत ही उपयोगी सूत्र था लेकिन तब अगली पीढ़ी ने तत्काल नहीं

स्मृति शेष

समझा और जब समझा गया तब तक कई लोग अपने लेखन का रिदम खो चुके थे।

लगभग 40 या 42 वर्ष पुरानी एक और घटना याद आती है। तब एकल गोष्ठियों का एक दौर चलाया गया था। उसमें एक कवि कविताएं पढता था फिर उसकी कविताओं पर सवाल जबाब का क्रम चलता था। इसी क्रम में अडिग जी का नंबर आया। दादा एक घंटे से अधिक समय तक गीत गजलों की झड़ी लगाये रहे। एक से एक नायाब गीत, एक से एक उम्दा गजल। समां बंधा गया। फिर शुरू हुए सवाल जबाब। बड़े भाई अनिवेश ने किसी गीत को लेकर शंका उठायी तो दादा ने कहा कि कविता बुद्धि के बाद शुरू होती है। इसको को ले कर काफी समय तक कवि समाज में आलोचना समालोचना होती रही। कतिपय उपहास भी हुआ लेकिन दादा अपनी बात पर डटे रहे। इसके काफी समय बाद अंततः सभी ने स्वीकारा कि दादा ठीक थे। हम लोग सूक्ति की गहराई तत्काल नहीं थाह सके। उनके गीत गजल भविष्य की झांकी में दे जाते थे। तीस साल पहले उन्होंने कहा था कि ....**इस प्रदूषण में बताओ सांस कैसे लें, ऑक्सीजन बहुत कम है इस सदी के पास, आदमी अब नाम से जाना नहीं जाता, हर एक बस एक क्रम है इस सदी के पास।**

एक बार वे एक कविसम्मेलन में ग्वालियर गये तो लखनऊ में ट्रेन पर चढ़ने की आपाधापी में उनकी दो डायरियां खो गयीं। उन्होंने बताया कि उसमें तीन सौ गीत थे। कवि के लिए यह कष्टप्रद स्थिति होती है। यदि उनके तीन सौ रूपये गिर जाते तो उन्हें इतना कष्ट नहीं होता क्यूंकि रूपये तो फिर फिर आ जायेंगे लेकिन गुम हुए गीत नहीं लौटने वाले। प्रवाह के वे 24 साल से संरक्षक थे और दो साल पहले तक उनकी अध्यक्षता में ही काव्य गोष्ठियां होती थीं। अडिग जी जन्मजात कवि थे और कवि के अलावा वे न कुछ और थे और न ही कुछ और बनने के इच्छुक रहे। गीतों में उनका कोई सानी नहीं था तो प्रगतिशील कविताओं में कम शब्दों में बड़े विचारों को बाँध देना उनकी विशेषता थी। आज वे अडिग जी हमारे बीच नहीं रहे जिन्हें गीत ऋषि की पदवी से विभूषित किया जाता था और यह उपाधि स्वयं दादा राजबहादुर विकल ने दी थी। अस्तु हम जनपद के लोग सभी के निस्वार्थ मार्गदर्शक महाकवि दादा अडिग जी को प्रणाम करते हैं और उनकी ही पंक्तियों के साथ उन्हें अपनी आत्मिक श्रद्धांजलि देते हैं .....**कोई नया प्रयास कभी जिंदगी करे, खुल के अट्ठाहस कभी जिंदगी करे, क़दमों के इसलिए निशान डाल रहा हूँ, शायद मुझे तलाश कभी जिन्दगी करे।**

दो बोध कथाएँ

राजा या चोर

एक माँ अपने बेटे के साथ बाज़ार से जा रही थी। उसी समय उस बाज़ार से कुछ सिपाही एक चोर को लेकर जा रहे थे। बेटे ने माँ से पूछा, 'माँ वो कौन है और उसके आस–पास सिपाही क्यों हैं' माँ ने कहा, 'वो एक चोर है और सिपाही उसे पकड़ कर ले जा रहे हैं ताकि उसे उचित सज़ा दें और जेल में बंद करें। थोड़ा आगे जाने पर उस नगर का राजा सामने आता नज़र आया, उसके आस–पास भी बहुत से सिपाही थे।

बेटे ने तुरंत माँ से कहा, 'माँ, माँ देखो सिपाही और एक चोर को ला रहे हैं।' माँ ने हलकी आवाज़ में कहा, 'धीमे बोलो बेटा, वह राजा हैं और ऐसी बात करने पर हमें दंड दे सकते हैं। बेटे ने कहा, 'माँ क्या फ़र्क है? राजा के आस–पास भी सिपाही हैं और चोर के आस–पास भी सिपाही ही हैं।' माँ ने कहा, भज़मीन–आसमान का फ़र्क़ है। उस चोर के आस–पास जो सिपाही हैं, वे चोर को काबू में रखते हैं, अगर वह भागने की कोशिश करे तो उसे और भी सख्त सज़ा मिल सकती है। सिपाही उस चोर को जहाँ ले जाएं उसे जाना होगा, जो दें वह खाना होगा, जहाँ रखें वहाँ रहना होगा। वह अपनी इच्छा से कुछ भी नहीं कर सकता। इसके विपरित राजा के साथ के सारे सिपाही राजा के काबू में हैं। राजा जो बोले वह उन्हें करना होगा, जहाँ ले जाए वहाँ उन्हें जाना होगा, अगर राजा कहे मुझे अकेला छोड़ दो तो सिपाहियों को राजा को कहना मानना होगा।'

ऐसे ही हमारा मन, हमारी भावनाएँ, हमारे विचार सिपाही हैं। अगर हम उनके काबू में हैं तो हम चोर हो गए। अगर वे हमारे काबू में हो गए तो हम राजा। चुनाव हमको खुद को करना है कि हम क्या बनना चाहते हैं राजा या चोर!!!

स्वयं सीटी बजाकर खेल खत्म न करें...

मैंने स्कूल के खेल के मैदान में एक स्थानीय फुटबॉल मैच देखा था। वहा बैठने के बाद, मैंने एक लड़के से पूछा कि 'स्कोर क्या है' उसने एक मुस्कान के साथ उत्तर दिया 'वे हमसे 3.0 से आगे चल रहे हैं।'

मैंने कहा, 'सच में!' 'मेरे कहने का मतलब है कि आप निराश न हों।' मैंने उसे सांत्वना देने की कोशिश करी। 'निराश!!' लड़के ने हैरान नज़र से मुझे घूरा। मैं निराश क्यों होऊँगा जबकि रेफरी ने खेल खत्म होने की अंतिम सीटी अभी तक नहीं बजाई है। मुझे टीम और टीम प्रबंधकों पर पूरा विश्वास है, हम निश्चित रूप से विजय प्राप्त करेंगे।

वाकई, मैच उस लड़के की टीम के पक्ष में 5–4 से समाप्त हुआ। उसने एक सुंदर मुस्कान के साथ धीरे से मेरी ओर हाथ हिलाया और चला गया।

मेरा मुँह आश्चर्य से खुला रह गयाय ऐसा आत्मविश्वासय इतना जबरदस्त विश्वास! उस रात जैसे ही मैं घर वापस आया, उसका सवाल मेरे मन में घूम रहा था। मुझे निराश क्यों होना चाहिए। जबकि रेफरी ने अंतिम सीटी नहीं बजाई है। ठीक इसी तरह जिंदगी एक खेल की तरह है...अंत तक डटे रहो! क्यों निराश होते हो, जबकि अभी जीवन बाकी है। क्यों आशा खोते हो जबकि अभी अंतिम सीटी नहीं बजी। सच्चाई यह है कि बहुत से लोग खेल समाप्ति की आखिरी सीटी खुद ही बजा देते हैं और हार मान लेते हैं। जब तक जिंदगी है, कुछ भी नामुमकिन नहीं और तब तक आपके लिए कभी भी देर नहीं होती। हाफ टाइम फुल टाइम नहीं होता। स्वयं सीटी बजाकर कभी भी खेल को खत्म मत होने दे।

शाहजहांपुर के कुछ शायरों की गज़लें

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

प्यार में मिल के बिछड़ना
भी मुकद्दर में था।
खेल जाए न बिगड़ मैं
तो इसी डर में था।
आप जब चोर न थे
फिर था भला डर कैसा,
क्यों पसीना था छुटा
आपको पल भर में था।
खुद ब खुद आके लगा हो
मिरे सर पे कोई,
इतना दम तो न किसी
एक भी पत्थर में था।
बात थी साफ कि फल
फूल नहीं हैं मिलने,
बीज हमने ही तो
बोया किसी बंजर में था।
छोड़ दी फिर भी शराबी
ही कहा जाता हूँ,
'ज्ञान' इससे तो भला
मय के मयस्सर में था।

पियूष शर्मा

मुकम्मल ज़िन्दगी
मिलती नहीं है
तभी दिल को खुशी
मिलती नहीं है
गमों की तीरगी
तो है दिलों में
वफ़ा की रोशनी
मिलती नहीं है
जहाँ हों नफ़रतों
के आशियाने
वहाँ पर सादगी
मिलती नहीं है
अकेला हो गया
हूँ इस जहाँ में
तिरे बिन आशिक़ी
मिलती नहीं है
बहुत बेबस उमीदों
का सफ़र है
तभी तो ताज़गी
मिलती नहीं है

इशरत सग़ीर

तू इस तरह से न कर
लाल लाल आँखों को।
जो बात करना है
आँखों में डाल आँखों को।
हिसाब देना पड़ेगा
इन्हें भी महशर में,
अभी तो छूट मिली है
गिज़ाल आँखों को।
यही दुआ है इन्हें यूँ
रखे ख़ुदा महफ़ूज़,
बुरी नज़र न लगे बे
मिसाल आँखों को।
अब ऐसे दौर में बीनाई
भी अज़ीयत है,
मैं चाहता हूं कि फेकूँ
निकाल आँखों को।
किसी भी तरह से मुमकिन
कहाँ है ये 'इशरत',
कि अश्क सूट करें ख़ुश
ख़िसाल आँखों को।

विकास सोनी 'ऋतुराज'

समझ आता नहीं
हर बार मेरे।
ये कैसे लिख गए
अशआर मेरे।
मोहब्बत का हुआ
है रोग प्यारे,
नहीं बचने के हैं
आसार मेरे।
भटकने ही नहीं देते
हैं मुझको,
खुदा की नेश्मतें
सालार मेरे।
उदासी ने अकेला
कर दिया है,
खुशी में साथ थे
सब यार मेरे।
न कर लूँ खुदकुशी
मैं तंग आकर,
न रंज–ओ–ग़म के
पत्थर मार मेरे।

विकास शर्मा 'पारस'

चाहता हूँ मैं
इक नई दुनिया।
प्यार के रंग से भरी दुनिया।
तुम अगर हो यहाँ
तो सबकुछ है,
बिन तुम्हारे नहीं
मेरी दुनिया।
इश्क़ कैसे भला
मुक़म्मल हो,
बन के दुश्मन खड़ी
मिली दुनिया।
ख़्वाब हमने सजा
लिए उनके,
जो किसी गैर की
बनी दुनिया।
रोज इक तज़ुर्बा
मिला 'पारस',
हादसों में गुज़र
गई दुनिया।

/ सम्पादकीय /

जनता सर्वोपरि या सियासत...

राज्य और केन्द्र संघीय ढांचे की दो धुरी होते हैं विकास के लिए कुछ परियोजनाएं जहां राज्य सरकार चलाती है वहीं कुछ केन्द्र सरकार के अधीन चलाई जाती है। जिनका संचालन केन्द्र करता है, केन्द्र द्वारा संचालित विकास परियोजनाओं में राज्य सरकारों का सहयोग सदैव अपेक्षित रहता है लेकिन देखने में आया है कि जब केंद्र और राज्य में दो अलग दलों की सरकारें होती हैं, तो अक्सर दोनों के बीच सियासी टकराव देखा जाता है। अगर उस राज्य में केंद्र सरकार कोई परियोजना लेकर आती है, तो राज्य सरकार का रुख प्रायः असहयोग का या उदासीन ही देखा जाता है। इसका ताजा उदाहरण हावड़ा से न्यू जलपाईगुड़ी के लिए रवाना की गई पहली वंदे भारत रेल को हरी झंडी दिखाने के मौके पर देखने को मिला। उस कार्यक्रम में नाराज मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मंच पर चढ़ने से इनकार कर दिया और वे नीचे सामने की कुर्सी पर बैठी रहीं। हालांकि उन्हें रेलमंत्री और वहां के राज्यपाल ने मनाने का प्रयास किया, पर वे नहीं मानीं। बताया गया कि वे इसलिए नाराज हो गईं कि उन्हें देख कर भाजपा कार्यकर्ताओं ने नारे लगाए। ऐसा पहले भी हो चुका है, जब प्रधानमंत्री की मौजूदगी में ममता बनर्जी अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए मंच से नीचे उतर गई थीं।

हालांकि यह कोई अनोखी बात नहीं है, हर राजनीतिक दल के कार्यकर्ता अपने नेताओं के समर्थन और विपक्षी नेताओं के खिलाफ नारेबाजी करते ही हैं। ममता बनर्जी से उम्मीद की जाती थी कि वे भाजपा कार्यकर्ताओं की नारेबाजी को नजरअंदाज कर देतीं। मगर यह भी सच है कि मर्यादाओं का पालन दोनों तरफ से अपेक्षित होता है। बेशक वह केंद्र सरकार की परियोजना के उद्घाटन का अवसर था, पर उस राज्य की मुख्यमंत्री अगर वहां अतिथि के रूप में आमंत्रित थीं, तो उनका आदर किया ही जाना चाहिए था। हालांकि उस घटना को तृणमूल कांग्रेस अपनी नेता के अपमान के रूप में प्रचारित कर रही है, मगर वास्तव में बात इतनी भर नहीं है। असल बात राज्य में केंद्र की परियोजना से राजनीतिक दलों को यह लगता है कि उनका जनाधार के इधर से उधर सरक रहा है।

चूंकि ममता बनर्जी केंद्र सरकार पर सदा आक्रामक देखी जाती हैं, उसकी नीतियों और फैसलों पर एतराज जताती रही हैं, इसलिए वे प्रायः केंद्र सरकार के कार्यक्रमों में असहज महसूस करती रही हैं। यह ठीक है कि राजनीतिक समीकरणों के लिए दलगत आधार पर मतभेद प्रकट करना अनुचित नहीं, मगर किसी परियोजना के उद्घाटन के मौके पर ऐसी नाराजगी या अहंकार का प्रदर्शन ठीक नहीं माना जा सकता। जिस रेल का उद्घाटन किया गया, आखिरकार उसका लाभ राज्य के लोगों को ही मिलेगा। उससे वहां नए रोजगार पैदा होंगे। बेशक कोई केंद्र की परियोजना हो, पर लाभ अगर राज्य को मिल रहा है, तो वहां के मुख्यमंत्री को उससे खुश ही होना चाहिए। इस तरह बार–बार नाराजगी जाहिर करना न तो एक मुख्यमंत्री की गरिमा के अनुकूल कहा जा सकता है। राज्य की जनता के हितों को सियासी समीकरणों से परे ही रखना चाहिए।

पाश्चात्य समाज का यह कैसा जश्न?

डा कनक रानी

नए सत्र की पदचाप और इस दौरान कंझावला का मर्माहत करने वाला हादसा सभ्य समाज को बहुत कुछ सोचने को विवश कर देता है। यह कैसा जश्न है? जश्न के नाम पर नशे में धुत होना और अपने विवेक को खो देना, यही नहीं, अपने कुकृत्य को संज्ञान में भी न ले पाना मानवता को भी शर्मसार करने वाला है। ध्यातव्य है कि इन विसंगतियों के चलते परिवार असमय आत्मीय–परिवारी जन को खोने का दंश झेलता है। उसके लिए इस मर्मांतक पीड़ा से उबर पाना कदाचित संभव नहीं। सपने शांत हो जाते हैं, संवेदनाएं हिल जाती हैं। कहीं आक्रोश है, कहीं दुयख, तो कहीं संवेदनाएं...देर रात काम से लौटने वालों के अंदर सिहरन उत्पन्न हो सकती है, मन असुरक्षा से घिर सकता है, कैसे कोई परिवार अपने आत्मीय/परिवारी जन के घर वापस आने तक सुकून का अनुभव कर सकता है। ऐसे घटनाक्रम व्यक्तिगत क्षति को तो दर्शाते ही हैं, सामाजिक परिवेश को भी रुग्ण बनाते हैं। विचारणीय है कि नव वर्ष की शुरुआत में जब सामाजिक/राष्ट्रीय चुनौतियों का सामना करने के लिए सामाजिक स्वरूप को बेहतर बनाने के लिए युवा शक्ति की रचनात्मक सहभागिता होनी चाहिए, ऐसे में नशे से चूर युवकों का दिग्भ्रमित होना जन सामान्य को विचलित करने वाला है।

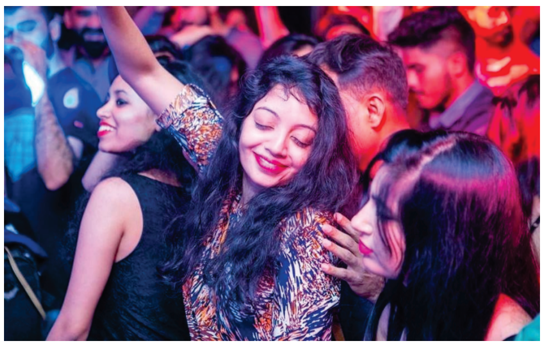

यह निर्विवाद तथ्य है कि सामाजिक संस्थिति को दूषित करती हुई ऐसी घटनाएं देश की साख को भी धूमिल करती हैं। दंडात्मक व्यवस्था के उपरांत भी ऐसी घटनाओं को रोका नहीं जा पा रहा है। अतएव इस दिशा में व्यष्टि और समष्टि स्तर पर वैचारिक मंथन की आवश्यकता है। इस हेतु शासनिक प्रयासों के अतिरिक्त जनसामान्य द्वारा भी समाधान की ओर बढ़ने की आवश्यकता है। सुरक्षित व्यवस्था के लक्ष्यगत सार्वजनिक प्रयत्नों से परिवेश में बदलाव की संभावनाएं हैं। जश्न के नाम पर युवा वर्ग में नशा वृत्ति की ओर झुकाव विशेष चिंतन–मनन करने के लिए आग्रह करता है। नशावृत्ति के कारण उत्पन्न हृदयहीनता–विवेक शून्यता से दूरी बनाने हेतु सार्थक व सक्रिय प्रयासों की अपरिहार्यता अनुभूत हो रही है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इस घटना के मूल में अन्य भी कारण संभावित हों, किंतु युवकों की दिग्भ्रमित स्थिति के मूल में नशा वृत्ति को भी देखते हुए इससे बचाव हेतु संदर्भित उपायों को केंद्रित करना उचित है। जनहितार्थ नशावृत्ति के दुष्प्रभावों को संज्ञान में लेने की अतीव आवश्यकता है।

सम्प्रति, युवकों में नशावृत्ति एक गंभीर चिंतनीय पक्ष है। समाज के लिए घातक नशे के दुष्प्रभाव पर चर्चा करना कदाचित आवश्यक हो गया है। नशे की हालत में बेतहाशा दौड़ाते हुए वाहनों ने कितनों को ही आहत किया है, स्मृतिशेष किया है। इस प्रकार व्यक्ति/परिवार/समाज को जो क्षति पहुंचती है, उसका आकलन करने में शब्द कदाचित सक्षम नहीं।

इसमें कोई संशय नहीं कि नशावृत्ति व्यक्ति को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है। यह नैतिकता को भी क्षीण बना सकती है। नशावृत्ति से उदार चरित्र की अवहेलना संभावित है। इसके दुष्प्रभाव में समाज बलहीन/ शक्तिहीन हो सकता है। बहुधा नशे की स्थिति में किए गए क्रियाकलाप नकारात्मक ही अनुभूत होते हैं। नशा द्वारा बौद्धिक धरातल को आघात पहुंचाने के दुष्परिणामस्वरूप विवेक शून्यता की संभावना बनी रहती है।

इस स्थिति में युवा शक्ति के संरक्षणार्थ उन्हें नशे के भयावह मार्ग से हटाने के लिए संकल्पित होना वांछित है। ऐसे में माता–पिता–अभिभावकों का गंभीर दायित्व बन पड़ता है कि वह अपनी संतति को नशे से बचाने के लिए जागरूक हों। युवावस्था तो युवाओं द्वारा सपनों को आकार देने का सर्वाधिक उपयुक्त समय है, कर्तव्यों के प्रति ऊर्जस्विल होने का समय है। इस हेतु उनमें चारित्रिक सुदृढ़ता को संजोने की अपेक्षा है। अन्ततः भटकते हुए युवा वर्ग को नशे की भयावहता से सजग कर–यथोचित दिशा में प्रोत्साहित कर समाज को सकारात्मक वातावरण देना संभव है।

कौशल विकास और सनातन संस्कृति

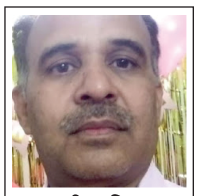
सुशील मिश्रा

भारत में सांस्कृतिक सम्मिश्रण को स्वीकार न करने वाली दो संस्कृतियां आईं एक इस्लाम और दूसरी यूरोपियन। इस्लामिक संस्कृति में गुटीय सामाजिक भाव था, जबकि यूरोपियन संस्कृति व्यष्टिमूलक थी। भारतीय संस्कृति को दोनों ने ही प्रभावित किया, यह प्रभाव सनातन संस्कृति के प्रत्येक पक्ष पर पड़ा या बलात डाला गया। इस्लामिक संस्कृति ने तलवार के बल पर स्वयं को स्थापित किया । यूरोपियन संस्कृति ने छल, बलए चातुर्य कौशल और धूर्तता का प्रयोग करते हुए स्वयं को स्थापित किया। यहां इनका सशक्त भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से संघर्ष भी हुआ और चुनौती भी मिली। भारतीय समाज चार पुरुषार्थ– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष तथा चार आश्रम–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास की सामाजिक व्यवस्था के अनुसार सुगठित था। उक्त चार वर्गीय विभाजन में सबसे महत्वपूर्ण आश्रम 'गृहस्थाश्रम' और पुरुषार्थ 'कर्म' होता था। दोनों का संबंध अर्थोपार्जन की मेरुदंड से जुड़ा हुआ था।

अर्थ उपार्जन के लिए व्यक्ति को श्रम करना पड़ता है। श्रम की तीन कोटियां होती हैं मानसिक श्रम, कम शारीरिक श्रम और अधिक शारीरिक श्रम। विजेता वर्ग ने अपने लोगों को स्थापित करने के लिए भारतीय सामाजिक गठन पर सीधा आक्रमण किया। 'कर्म' को छोटा–बड़ा घोषित करते हुये भारत के परंपरागत हुनर वाले वर्ग के हतोत्साहन की जो परंपरा मध्यकाल से प्रारंभ हुईय उसे आधुनिक काल में अंग्रेजों ने और आगे बढ़ाया। ब्रिटिश काल में नव शिक्षित भारतीय वर्ग ने इसे प्रचारित करने में अपनी भूमिका का निर्वहन किया। यह वह वर्ग था जो सत्ता के साथ मिलकर स्वयं को लाभान्वित करना चाहता था। ऐसा वर्ग हमेशा रहता है और आज भी है। इन परिस्थितियों में शासन के उच्च पदों को अपने विशिष्ट समर्थकों के लिए आरक्षित कर लिया। वस्तुतः इन पदों का संबंध मानसिक श्रम से होता था।

मध्यकाल के आक्रमणकारी स्थल मार्ग से अपनी सेना को साथ लेकर आए थे। जब इन्होंने भारत में स्थाई निवास बनाना सुनिश्चित कर लिया तब इन्हें अपनी जनसंख्या को भारतीय संस्कृति में

समायोजन पर विचार करना था। इस वर्ग के समायोजन के लिए एक वैचारिक पृष्ठभूमि का निर्माण किया गया, जिसके अंतर्गत कम.शारीरिक श्रम वाले हुनर चयनित किए गए। भारत में हुनर का कार्य परंपरागत समुदायों के द्वारा किया जाता था। वैचारिक हतोत्साहन और आक्रांताओं के वैचारिक प्रभाव से भारतीय दस्तकारों ने अपने परंपरागत धंधा छोड़ना प्रारंभ कर दिया। इस खाली स्थान को नवागंतुक वर्ग में उस धंधे को अपनाकर भरा। अंग्रेजों के शासन कल में यह स्थिति बद से बदतर होती गई । ज्यादातर दस्तकारों ने अपने दस्तकारी के कार्य छोड़ दिए।

साम्यवादी इतिहास लेखन में इस प्रवृत्ति के लिए प्रायः फैक्ट्रियों को उत्तरदाई ठहराया गया हैट लेकिन सच कुछ अधिक गहरा है जो स्पष्ट नहीं किया गया है। मशीनीकरण के युग में भी तकनीकी ज्ञान से युक्त व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ती है। लेकिन कर्म को छोटा–बड़ा करने की प्रवृत्ति ने, तकनीक सीखने की पद्धति को व्यक्ति के अंदर मनमस्तिष्क तक मार दिया। यह भी एक विरोधाभास ही है कि सनातन समाज के अंतर्गत जातीय बंधनों की जड़ता धीरे–धीरे शिथिलता की ओर बढ़ रही है परंतु हुनर सीखने की कला अभी भी जातीय बंधनों में और छोटे.बड़े में बनी हुई है। दूसरा विरोधाभास यह है कि हुनर या कौशल की मांग के अनुरूप कारीगरों की संख्या कम है और सीखने की प्रवृत्ति उससे भी कम है।

सन 2014 के बाद केंद्र में आई भारत सरकार ने इन विरोधाभासों पर विचार किया। हुनर के महत्व को स्वीकार करते हुए 'कौशल विकास मंत्रालय' की स्थापना की गई। यह समाज के उस वर्ग के लिए एक खुला अवसर था। जो बेरोजगार है और राष्ट्र योगदान में अपनी भूमिका नहीं तलाश पा रहा था। भारतीय समाज के अंतर्गत वैचारिक परिवर्तन हेतु बड़ी भूमिका निर्वहन करने वाला वर्ग अभी सामने नहीं आया है। जो लोगों की मानसिकता को प्रभावित करते हुए प्रासंगिक उपयोगिता को समाज में संप्रेषित कर सके। लोगों की मानसिकता को परिवर्तित कर सके। कहीं न कहीं आज भी साम्यवादी अर्थ–मूल्य, गणित और सांख्यिकी–औसत से समाज को बदलने की कोशिश करी जा रही है। जिसके कारण अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं हो रही है।

युवाओं के लिए जहर है बॉलीवुड का 'बेशर्म रंग'

शिशिर शुक्ला

किसी देश की युवा पीढ़ी वहां के भविष्य की आधारशिला होती है। देश की प्रगति एवं विकास निश्चित रूप से इस बात पर निर्भर करते हैं कि वहां के युवा का बौद्धिक, वैचारिक, चारित्रिक एवं मानसिक स्तर कैसा है। युवाओं के चरित्र एवं मानसिकता पर संगति एवं चहुंओर के परिवेश के साथ–साथ मीडिया एवं सिनेमा का भी एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। वर्तमान युग में युवा वर्ग भी कहीं न कहीं भावनाओं से दूर हटकर व्यावहारिकता की ओर विस्थापित हो गया है।

हाल ही में हिंदी सिनेमा (बॉलीवुड) की एक चर्चित फिल्म 'पठान' के एक गाने 'बेशर्म रंग' ने पूरे देश में तहलका मचा कर रख दिया। गीत के बोल, अभिनेत्री की भगवा बिकनी एवं आपत्तिजनक दृश्यों को लेकर पूरे देश में बवाल मचा और एक बार पुनः 'बायकॉट बॉलीवुड' की लहर दौड़ गई। फिल्म की रिलीज से पहले ही उस पर आपत्तियां व प्रश्नचिन्हों की बौछार होना निस्संदेह फिल्म को बहुचर्चित कर देता है। सत्य कहा जाए तो कभी–कभी ऐसा प्रतीत होने लगता है कि फिल्म के निर्माता व निर्देशक के द्वारा जानबूझकर फिल्म को चर्चा में लाने के उद्देश्य से फिल्म में इस प्रकार का अमर्यादित, अश्लीलता एवं फूहड़ता से युक्त मसाला मिलाया जाता है। यह एक अलग बात है कि इस बार विवाद का केंद्र बिंदु अभिनेत्री द्वारा पहनी गई भगवा रंग की बिकनी एवं फिल्म का गीत 'बेशर्म रंग..' था। किंतु यह प्रथम बार नहीं है जब बॉलीवुड के द्वारा समाज तथा राष्ट्र को अश्लीलता एवं नग्नता परोसी गई हो। अंतरंग दृश्यों एवं द्विअर्थी संवादों के माध्यम से फिल्मों में नग्नता का समावेश मानो एक फैशन सा बन गया है। ऐसी ऐसी फिल्में निर्मित की जा चुकी हैं जिनको परिवार एवं बड़े बुजुर्गों के साथ देखना असंभव बात है।

आखिरकार हम किस दिशा में जा रहे हैं। हमारा वैचारिक दृष्टिकोण किस स्तर तक गिरता जा रहा है। हमारी भारतीय संस्कृति जो परंपराओं एवं मूल्यों के मोतियों से पिरोई हुई एक माला है, टूटकर क्योंकि बिखरती जा रही है। फिल्मों के माध्यम से कहीं न कहीं एक संदेश संपूर्ण राष्ट्र में प्रसारित हो जाता है। विशेषकर, यदि युवा एवं किशोर वर्ग की बात की जाए तो उनका सिनेमा के प्रति आकर्षण ठीक वैसा ही होता है जैसा कि चुंबक एवं लोहे के मध्य हुआ करता है। फिल्मों के माध्यम से युवाओं को किसी दिशा की ओर उन्मुख करना बेहद सरल है क्योंकि युवाओं की मानसिकता को बदलना एवं मोड़ना अत्यंत आसान होता है। कई दशकों पूर्व के सिनेमा एवं आज के सिनेमा में जमीन आसमान का फर्क है। आज के निर्माता व निर्देशक का एकमात्र उद्देश्य अधिक से अधिक लाभ कमाना है। उनके द्वारा निर्मित फिल्मोत्पाद से समाज में क्या संदेश पहुंचेगा अथवा युवा पीढ़ी को उनकी फिल्म किस रास्ते पर लेकर जाएगी, इन बातों से उन्हें तनिक भी सरोकार नहीं है। युवा, जोकि देश का भविष्य है, यदि अपने मार्ग से भटक गया तो देश में बर्बादी के कदम पड़ते तनिक भी देर न लगेगी। सिनेमा को अपनी दिशा में परिवर्तन करना होगा। अश्लीलता एवं नग्नता से परिपूर्ण फिल्मों के बजाय उसे समाज को ऐसी फिल्में देनी चाहिए जोकि भारतीय संस्कृति की प्राचीन परंपराओं, विशेषताओं, मूल्यों तथा गौरवशाली इतिहास पर आधारित हों, ताकि हमारा युवावर्ग अपने देश के उस गरिमापूर्ण इतिहास से परिचित हो सके, साथ ही साथ सिनेमा को विज्ञान एवं तकनीकी पर आधारित फिल्मों के माध्यम से समाज, विशेषकर युवा वर्ग को इस बात से परिचित कराना चाहिए कि आज विज्ञान एवं तकनीकी ने किस स्तर तक प्रगति कर ली है। ऐसा करने से युवाओं को दिशाहीनता एवं पथभ्रष्टता के गर्त में गिरने से बचाया जा सकता है।

देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून बेहद जरूरी : तोगड़िया

अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद के संस्थापक अध्यक्ष डा प्रवीण भाई तोगड़िया का शाहजहांपुर में हुआ स्वागत

लोक पहल

शाहजहांपुर। हिंदुओं के फायर ब्रांड नेता कहलाने वाले अंतरराष्ट्रीय हिंदू परिषद के संस्थापक अध्यक्ष डॉ प्रवीण भाई तोगड़िया ने कहा कि देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाया जाना सबसे ज्यादा जरूरी है। इसके लिए संघर्ष जारी रहेगा। इस बीच उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार को 1108 नंबर दिए। डॉ प्रवीण भाई तोगड़िया शाहजहांपुर के खिरनीबाग स्थित एडवोकेट विनय शुक्ला के आवास पर मीडिया कर्मियों से बातचीत कर रहे थे। वह हिंदू जागरण, सुरक्षा व समृद्धि को लेकर हिंदू ही आगे के संकल्प के साथ प्रवास पर जिले में आए थे। उन्होंने बताया कि वह देशभर में घूमकर

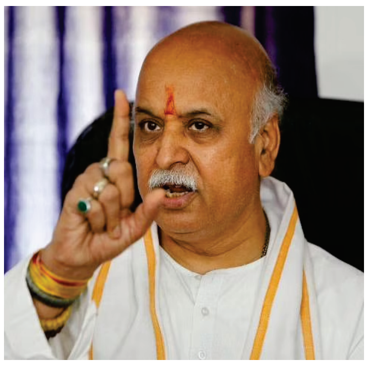

हिंदुओं को जगाने का काम कर रहे हैं। बोले कि श्रद्धा, कन्हैया और राजौरी समेत देशभर में घट रही सैकड़ों घटनाओं से हिंदू दुःखी और चिंतित है। आने वाले समय में हमारे गांव में भी हमारी बेटी श्रद्धा और बेटे का कन्हैया जैसा हाल होगा, यह चिंतनीय हैं। बताया कि सुरक्षा, समृद्धि और गौरव की हिंदू ही आगे योजना बनाकर हम देश के करोड़ों घरों में जा रहे है। जगह–जगह घूमकर हिंदुओं को जगाना ओर कार्यकर्ता को आगे क्या करना है यह समझा रहे हैं। बताया कि वह 24 सालों से हिंदुओं को जगाने के लिए घूम रहे है। उन्होंने चीन को भारत का सबसे बड़ा दुश्मन बताया, बोले के पाकिस्तान और अफगानिस्तान को खाना ही नहीं मिल रहा है। इसलिए भूखे को दुश्मन मानना ठीक नहीं है। इससे पूर्व शाहजहांपुर आगमन पर प्रवीण तोगड़िया का जगह–जगह भव्य स्वागत किया गया।

भाजपा सरकार के खिलाफ सपाईयों में आक्रोश किया प्रदर्शन

लोक पहल

शाहजहांपुर। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं पर उत्पीड़न को लेकर नेताओं जोरदार प्रदर्शन कर सिटी मजिस्ट्रेट को ज्ञापन सौंपा। सपा के निवर्तमान जिला अध्यक्ष तनवीर खां के नेतृत्व में विभिनन समस्याओं को लेकर समाजवादी पार्टी के नेता व कार्यकर्ता खिरनीबाग चौराहे पर एकत्रित हुए और धरना प्रदर्शन कर नारेबाजी करते हुए कलेक्ट्रेट पहुंचे जहां राज्यपाल को संबोधित आठ सूत्रीय ज्ञापन नगर मजिस्ट्रेट आशीष कुमार सिंह को सौंपा। इस मौके पर तनवीर खान ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार में सपा कार्यकर्ताओं व नेताओं पर लगातार फर्जी मुकदमे लिख कर जेल भेजने का काम किया जा रहा है लेकिन सपा के लोग चट्टान की तरह मजबूत है। उन्होंने कहा

अगर परेशान करना बंद नहीं किया तो थानों का घेराव किया जाएगा। पूर्व विधायक राजेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश भाजपा सरकार किसान विरोधी है। भाजपा सरकार किसान की समस्याओं को लगातार अनदेखी कर रही है। इस मौके पर ददरौल विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी राजेश वर्मा, सैयद रिजवान अहमद, गायत्री वर्मा, प्रदीप कुमार तिवारी उर्फ पिंटू, डॉ नवनीत यादव, पूर्व चेयरमैन इमरान खान, अवधेश कुमार पाल सहित सैकड़ो सपाई मौजूद रहे।

धूमधाम से निकाली गई साईं महापालकी यात्रा

लोक पहल

शाहजहांपुर। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री साईं महापालकी यात्रा शहर में पूरे हर्षोल्लास के साथ निकाली गई। पुलिस विभाग के वरिष्ठ अधिकारी श्री कांत त्रिपाठी व श्री साई शिक्षायतन विद्यालय की प्रबंधक नीता श्रीवास्तव ने संयुक रूप से पूजन कर यात्रा का शुभारंभ किया। श्रद्धा सबूरी सेवा ट्रस्ट के तत्वाधान में नगर में सबसे पुराने व प्रथम मंदिर श्री साई रक्षा धाम मंदिर कच्चा कटरा द्वारा दो दिवसीय श्री साई महापालकी महोत्सव 2023 के पहले दिन श्री साई महापालकी यात्रा आरपीएफ लाइन श्री साई मंदिर से प्रारंभ होकर कच्चा कटरा स्थित श्री साई रक्षा धाम मंदिर पर संपन्न हुई। शोभायात्रा का जगह जगह भव्य स्वागत किया गया। समापन में सामूहिक श्री साई खिचड़ी भोग का वितरण हुआ। श्री साई महापालिका का संयोजन ट्रस्ट के अध्यक्ष

अनूप गुप्ता, मुख्य ट्रस्टी अमिताभ बेरी व महामंत्री शरद राही की देखरेख में हुआ। आयोजन में पंकज श्रीवास्तव, अमित शर्मा, सुरेश गुप्ता, प्रीति बेरी, रेणु गुप्ता, वीना गुप्ता, वैभव, रमेश चेतन, विशाल गुप्ता, संजीव सिंह चंदेल, हर्षित, सत्येंद्र, अमित टंडन, पवन वर्मा, अमित काकू, अजय चौहान, के डी चावडा, चंदन यादव, शिवम यादव, नवीन रस्तोगी, अजय जायसवाल, किरण सक्सेना, पुनीत भसीन, कविता श्रीवास्तव, दीपिका भसीन, राजू सक्सेना प्रेम चंद गुप्ता व नीरज श्रीवास्तव, पियूष गुप्ता, कमल कुमार, अमन बेरी सलोनी बेरी आदि का सहयोग रहा।

जिला जेल में मनाया गया मकर संक्राति का त्यौहार

लोक पहल

शाहजहांपुर। जिला जेल में मकर संक्रान्ति का त्योहार धूमधाम से मनाया गया। जेल अधीक्षक मिजाजीलाल के द्वारा सभी बंदियों को मकर संक्रान्ति की बधाई देते हुए कहा कि यह नववर्ष, 2023 का पहला त्योहार है। इस पर्व पर आप लोग शपथ लें कि अब भविष्य में कोई ऐसा काम नहीं करेंगे कि दुबारा जेल आना पड़े। अन्य अधिकारियों व स्टाफ ने सभी बंदियों व आपस में एक दूसरे को शुभकामनाएँ दी। कारागार में निरुद्ध सभी बंदियों व स्टाफ के लिए विशेष रूप से भोजन के रुप में खिचड़ी तैयार कराई गई। जिसे

सभी अधिकारियों व स्टाफ व बंदियों ने साथ साथ बैठकर भोजन किया। जेल अधीक्षक सहित सभी अधिकारियों, चिकित्साधिकारी, कार्यालय स्टाफ व अन्य सभी स्टाफ के द्वारा बंदियों के साथ पंगत में बैठकर खिचड़ी का आनंद लिया।

प्रतिकूल परिस्थिति में वायु जैसे बनें युवा: प्रो राकेश

एसएस कालेज में राष्ट्रीय युवा दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय में 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के उपलक्ष्य में विविध प्रतियोगिताओं एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की विषय स्थापना करते हुए कला संकाय के अध्यक्ष प्रो आलोक मिश्रा ने कहा कि युवाओं को जिस महापुरुष का चरित्र प्रभावशाली लगे, जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में उसी के व्यक्तित्व के बारे में सोचना चाहिए। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो राकेश कुमार आजाद ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने अल्पायु में ही विश्व के युवाओं को मानवता का संदेश दिया था। उन्होंने कहा की परिस्थिति प्रतिकूल होने पर युवाओं को वायु की तरह कार्य करते हुए दृढ़ संकल्प के माध्यम से समस्याओं पर विजय पानी चाहिए। राजनीति विज्ञान विभाग की डॉ व्याख्या सक्सेना ने कहा कि युवाओं को अपना ध्यान अच्छा दिखने की बजाए अच्छा बनने पर केंद्रित करना चाहिए। इस अवसर पर राजनीति विज्ञान विभाग के द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में एमए प्रथम सेमेस्टर के छात्र शिवम कुमार ने प्रथम, बीए प्रथम सेमेस्टर के सचिन ने द्वितीय, नितिन सिंह ने तृतीय एवं सबा अंसारी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। डॉ शिशिर शुक्ला के संचालन में हुए कार्यक्रम में धन्यवाद प्रो मधुकर श्याम शुक्ला ने ज्ञापित किया। कार्यक्रम में डॉ राम शंकर पांडे, मृदुल पटेल, डॉ राजीव कुमार, डॉ सुजीत वर्मा, डॉ प्रतिभा सक्सेना, डॉ पूजा बाजपेई, डॉ बरखा सक्सेना, सीतू शुक्ला, डॉ श्रीकांत मिश्रा, हर्ष पाराशरी, अमित गंगवार, मानवेंद्र सिंह आदि उपस्थित रहे।

शाहजहांपुर में हर्षोल्लास के साथ मनायी गयी 'लोहड़ी'

लोकगीतों और ढोल की थापों पर जमकर हुआ भांगड़ा

लोक पहल

शाहजहांपुर। शहर की तीनों पंजाबी कालोनियों एवं सिख पंजाबी समुदाय के जिले में फैले फार्म हाउसो पर लोहड़ी पर्व मनाया गया।वैसे तो लोहड़ी नई फसल से जुड़ा पर्व है किंतु लाहौर के मुस्लिम जाट और पंजाब के राबिन हुड कहे जाने वाले दुल्हा भट्टी जिन्होंने सिख गुरुओं के प्रभाव में मुगलों से लोहा लिया था और संपन्न साहूकारों को लूटकर गरीब कन्याओं का विवाह कराने का संकल्प ले उसे पूरा किया था,के भावपूर्ण स्मरण का त्योहार है। सुंदरी मुंदरी होय,तेरा कौन विचारा होय, दुल्हा भट्टी वाला होय और हरना हरना उधार नहीं करना के लोक गीतों और ढोलो की थाप से भांगड़ा नृत्य जश्न में मस्ती घोल देता है।शहर से सटे सतवा स्थित गुरु रामदास फार्म पर सुबह से ही लोहड़ी का जश्न मनाया जाना शुरू हुआ,शाम होते होते पवित्र अग्नि में सबने आखर डाली। इस अवसर पर तजेंद्र सिंह, दलजीत सिंह, गुरुबेग सिंह, राजवीर सिंह, रंजित सिंह, हरदीप सिंह, मनिंदर सिंह, मनप्रीत सिंह, सोहन सिंह, कर्मवीर सिंह, सरबजीत सिंह इत्यादि उपस्थित थे।

छोटे लाड़ साहब के जुलूस को लेकर नगर मजिस्ट्रेट ने की बैठक

लोक पहल

शाहजहाँपुर। नगर मजिस्ट्रेट आशीष कुमार सिंह ने थाना आरसी मिशन में बैठक कर प्रत्येक वर्ष होली के अवसर पर आयोजित होने वाले छोटे लाड़ साहब के जुलूस की तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने निर्देश दिए कि जुलूस के दृष्टिगत तैनात किए जाने वाले एस.पी.ओ. की सूची की पुनः जांच कर उपयोगिता एवं कार्यकुशलता देख ली जाय। जुलूस एवं होली के पर्व के दृष्टिगत निरोधात्मक कार्यवाही समय से किए जाने के निर्देश भी नगर मजिस्ट्रेट ने दिए। उन्होंने पूर्व के आयोजनों के विषय में उपस्थित लोगों से फीडबैक लिया एवं शांतिपूर्ण आयोजन की अपील भी किया। इस अवसर पर प्रभारी निरीक्षक अरविंद चौहान सहित आयोजक झब्बू लाल गुप्ता, राहिल खान, संजीव गुप्ता, लल्ला सिंह, राशिद कुरैशी आदि उपस्थित रहे।

अब घर बैठे ऑनलाइन बुक कराएं रोडवेज बस में सीट

लोक पहल

शाहजहांपुर। रोडवेज की बसों में यात्रा करने वाले लोगों के लिए राहत भरी खबर है। अब वे घर बैठे ही वातानुकूलित बस की तरह ही साधारण बसों का टिकट भी ऑनलाइन बुक करा सकेंगे। उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम की एसी बसों के बाद अब साधारण बसों की भी ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा दी गई है। परिवहन निगम ने प्रदेश भर में लंबी दूरी की 2400 साधारण बसों को चिह्नित किया गया है। सभी डिपो की बसों में ऑनलाइन बुकिंग शुरू हो गई है। घर बैठे यात्री साधारण बसों के लिए भी अपनी सीट बुक करा सकेंगे।
यात्री परिवहन निगम की वेबसाइट पर जाकर एडवांस सीट बुक करा सकते हैं। मोबाइल पर यात्रियों को सफर से जुड़ी

सभी जरूरी जानकारी मिलेंगी। रोडवेज बसों में सीट ऑनलाइन बुकिंग करने से यात्री का मोबाइल नंबर निगम के पास आ जाएगा। ऐसे में बस रद्द होने समेत अन्य जरूरी सूचनाएं यात्रियों को मैसेज के जरिए मिल जाएंगी। बस के किसी कारण से रद्द होने की दशा में तत्काल खाते में पैसा भी वापस आ जाएगा ।

नई सोच के साथ आगे बढ़ रहा है उत्तर प्रदेश: योगी

लोक पहल

शाहजहांपुर। विगत छह सालों में गोरखपुर विकास की नई आभा के साथ आगे बढ़ा है। यहां के नागरिकों और नौजवानों को एक नई पहचान मिली है। गोरखपुर अब अपराध नहीं, आस्था और विकास का समन्वित केंद्र है। यह बात मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर महोत्सव 2023 के समापन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि सम व विपरीत परिस्थितियों में विगत छह सालों से गोरखपुर महोत्सव का आयोजन पूरी भव्यता से हो रहा है। गोरखपुर ने विकास की नई यात्रा प्रारंभ की है पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत वैश्विक मंच पर विकास की नई यात्रा पर है तो इसमें उत्तर प्रदेश भी नई सोच के साथ आगे बढ़ा है। गोरखपुर भी नई पहचान के साथ इसमें सहभागी बना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी पहचान अच्छाई से होनी चाहिए, कभी खुद बीमार रहे बीआरडी मेडिकल कॉलेज की स्थिति तो ठीक हुई ही, यहां एम्स भी खुल गया।गोरखपुर को चिड़ियाघर की सौगात मिल गई है।सीएम योगी ने कहा कि जिस जिले की पहचान अपराध से थी, वह गोरखपुर अब विकास और चार विश्वविद्यालयों की पहचान रखता है। गोरखपुर अब शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और उद्योग का हब बन रहा है,मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कला का सम्मान व प्रोत्साहन होना चाहिए।

पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने इनवेस्टर्स समिट पर उठाए सवाल

पहली समिट से कितनों को मिला रोजगार बताए सरकार

लोक पहल

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने लोकसभा चुनाव–2024 के लिए तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव (केसीआर) के साथ जाने को तैयार हैं। वह हैदराबाद में 18 जनवरी को केसीआर के नेतृत्व में होने वाली रैली में हिस्सा लेंगे। वहीं, कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा में शामिल होने पर असमंजस जताते हुए कहा कि पार्टी नेताओं से विचार विमर्श के बाद फैसला लेंगे।
अखिलेश ने कहा कि 2024 में जनता परिवर्तन करेगी। इंवेस्टर्स समिट के सवाल पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर हमला बोला। कहा कि कोई बताएगा कि पहली समिट से कितनों को रोजगार मिला है। समिट के नाम पर सिर्फ झूठ बोला जा रहा है। उन्होंने कहा कि काशी में लोग सीखने आते हैं। वह वैराग्य का स्थान है। सरकार वहां की सुंदरता खत्म कर रही है। नाव पर्यटन को तबाह किया जा रहा है। सपा सरकार की योजना थी कि नदियों की सफाई के लिए पहले नाले बंद किए जाएंगे। गोमती में काफी काम हुआ, लेकिन सरकार बदलने के बाद फिर से वह बदहाल हो गई है।
अखिलेश ने निकाय चुनाव पर कहा कि उन्हें आयोग नहीं, बल्कि सुप्रीम कोर्ट पर भरोसा है। भाजपा हमेशा पिछड़ों और दलितों को बांटने का काम करती रही है। भाजपा सत्ता का दुरुपयोग कर संस्थानों के जरिए चिह्नित लोगों का उत्पीड़न कर रही है। अखिलेश यादव ने युवा दिवस के मौके पर प्रेस कांफ्रेंस में सपा संस्थापक मुलायम सिंह यादव के संघर्षों पर आधारित कैलेंडर का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि आज के दिन नेताजी के काम और संघर्ष को याद किया गया। अखिलेश ने कहा कि युवा दिवस पर सभी युवा संकल्प लें कि नफरत की राजनीति खत्म हो क्योंकि तभी तरक्की संभव है।

यूपी निकाय चुनाव में फंसा और एक पेंच! ट्रांसजेंडरों ने उठाई आरक्षण की मांग

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में निकाय चुनाव को लेकर एक और पेंच फंस गया है। प्रदेश स्थानीय निकाय चुनाव में ट्रांसजेंडरों ने आरक्षण की मांग उठाई है। निकाय चुनाव के बीच ओबीसी आरक्षण को लेकर पेंच फंस गया था। ये मामला अभी इलाहाबाद हाई कोर्ट के बाद अब सुप्रीम कोर्ट में है। जिसके चलते यूपी में स्थानीय निकाय चुनाव टल गए हैं लेकिन इस बीच एटा में निकाय चुनावों मे ट्रांसजेंडरों को आरक्षण देने की मांग भी जोर शोर से उठाई गई है।
एटा महोत्सव में भारत की पहली

ट्रांसजेंडर कथक नृत्यांगना और यूपी ट्रांसजेंडर वेलफेयर बोर्ड की प्रमुख सदस्य देविका एस मंगला ने नई मांग रख दी है। देविका एस मंगला ने कहा, 'ट्रांसजेंडर्स के लिए निकाय चुनावों, विधानसभा और लोकसभा चुनावों में आरक्षण प्रदान करने की सरकार से जोरदार मांग की। ट्रांसजेंडरों की संख्या देश में करोड़ों में हैं, जिसे नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है।' उन्होंने सीएम योगी आदित्यनाथ से ट्रांसजेंडरों को आरक्षण देने की मांग रखी. उन्होंने कहा कि माननीय सुप्रीम कोर्ट ने एक निर्णय दिया था कि ट्रांसजेंडर को ओबीसी नॉन क्रीमी लेयर में रखा जाए लेकिन दुर्भाग्य ये है कि न तो उस क्रीमी लेयर का कुछ पता है, हम लोगों को हमारी जगह नहीं पता और कितना प्रतिशत हमें आरक्षण हैं हमें यह नहीं पता। पर जैसा कि मुझे लगता है कि इलाहबाद हाई कोर्ट ने जिस तरह की तत्परता दिखाई है, निकाय चुनाव में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिये अलग से सीटें आरक्षित होनी चाहिए।

लखनऊ पीजीआई के डाक्टरों को मिली बड़ी कामयाबी

देश में पहली बार रोबोटिक सर्जरी से निकाला गया थायराइड कैंसर

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के एसजीपीजीआई लखनऊ के डाक्टरों ने एक बड़ी कामयाबी हासिल की है। देश में पहली बार रोबोटिक सर्जरी से थायराइड कैंसर को दूर किया गया है। एसजीपीजीआई के डॉक्टरों ने रोबोटिक सर्जरी के जरिए पैपिलरी थायरॉइड कैंसर से पीड़ित 21 वर्षीय महिला का सफल ऑपरेशन किया है। अस्पताल की विज्ञप्ति में कहा गया है कि यह भारत में पहली बार हुआ है कि एक सरकारी संस्थान में रोबोटिक सर्जरी के माध्यम से एक कैंसरयुक्त थायरॉयड ग्रंथि को पूरी तरह से हटा दिया गया। प्रयागराज की रहने वाली इस मरीज में गांठ बन गई थी, जिसके बाद कमला नेहरू कैंसर अस्पताल में उसका पता चला। चूंकि जटिलताओं के कारण गले में चीरा लगाए बिना सर्जरी संभव नहीं थी, इसलिए उसे लखनऊ के अस्पताल में रेफर कर दिया गया।
प्रयागराज के कमला नेहरू कैंसर अस्पताल में आवश्यक जांच के बाद वहां के डॉक्टरों ने परिवार को बताया कि यह गांठ है और यह घातक है। इन जटिलताओं के कारण गले में चीरा लगाए बिना इसकी सर्जरी संभव नहीं थी। ऐसे में मरीज और उसके परिजन काफी उदास और निराश थे क्योंकि इससे सर्जरी के बाद निशान रह जाते थे। कमला नेहरू अस्पताल के डॉक्टरों ने तब रोगी को गर्दन में चीरा लगाए बिना सर्जरी के लिए डॉ. ज्ञान चंद, रोबोटिक थायराइड सर्जन, एसजीपीजीआई, लखनऊ के पास रेफर कर दिया। जरूरी जांच के बाद पता चला कि मरीज को पैपिलरी थायरॉइड कैंसर है, जिसे रोबोटिक तरीके से हटाया जा सकता है।

सदियों पुरानी है गोरक्षनाथ को खिचड़ी चढ़ाने की परंपरा?

लोक पहल

गोरखपुर। गोरखपुर के विश्व प्रसिद्ध मकर सक्रांती के पर्व पर गोरखनाथ मंदिर में खिचड़ी चढ़ाने की परंपरा सदियों पुरानी है। यहां के खिचड़ी मेले की प्रसिद्धि देश विदेश में है। जानकार बताते हैं कि किदंवतियों के अनुसार त्रेता युग में अवतारी और सिद्ध गुरु गोरक्षनाथ भिक्षाटन के दौरान हिमाचल के कांगड़ा जिले के प्रसिद्ध ज्वाला देवी मंदिर गए। देवी प्रकट हुईं और गुरु गोरक्षनाथ को भोजन का आमंत्रण दिया।
वहां के तामसी भोजन को देखकर गोरक्षनाथ ने कहा, मैं तो भिक्षाटन से मिले चावल–दाल को ही ग्रहण करता हूं। इस पर देवी ने कहा कि मैं चावल–दाल पकाने के लिए पानी गरम करती हूं। आप भिक्षाटन कर चावल–दाल लाएं। उन्होंने बताया कि गुरु गोरक्षनाथ वहां से भिक्षाटन करते हुए हिमालय की तराई में स्थित गोरखपुर आ गए। वहां उन्होंने राप्ती और रोहिणी नदी के संगम पर एक मनोरम जगह पर अपना अक्षय भिक्षापात्र रखा और साधना में लीन हो गए।

इस बीच खिचड़ी का पर्व आया, एक तेजस्वी योगी को ध्यानमग्न देखकर लोग उसके भिक्षापात्र में चावल–दाल डालने लगे, पर वह तो अक्षय पात्र था। लिहाजा वह भरने से रहा। लोग इसे सिद्ध योगी का चमत्कार मानकर अभिभूत हो गए। उसके बाद से ही गोरखपुर में बाबा गोरखनाथ को खिचड़ी चढ़ाने की परंपरा चली आ रही है।
बताया जाता हैं कि मंदिर परिसर में मकर संक्रांति से शुरू खिचड़ी मेला करीब एक महीने तक चलता है।चूंकि यह उत्तर भारत के बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक है। लिहाजा खिचड़ी मेले में पूरे उत्तर भारत से लाखों की संख्या में लोग आते हैं। इसमें से अधिकांश नेपाल–बिहार व पूर्वांचल के दूर–दराज के इलाकों से लाखों श्रद्धालु खिचड़ी चढ़ाने आते हैं। कुछ बाबा से मांगी मन्नत पूरी होने पर अपनी आस्था जताने आते हैं और कुछ मन्नत मांगने। यह सिलसिला सदियों से जारी है।

दिल-दिमाग और पेट की समस्याओं को बढ़ा देता है गुस्सा

बढ़ जाती है पेट की परेशानी

भावनाओं और पेट का गहरा संबंध है। गुस्से की वजह से गैस्ट्रो की समस्या होने लगती है। खाना पचता नहीं है। क रहने लगता है। डॉटर एटिनजिन कहते हैं- गुस्से में पेट की मांसपेशियां ज्यादा सक्रिय हो जाती हैं। कई बार आंते अपनी जगह से हट जाती हैं। इससे डायरिया तक हो सकता है। कई बार गुस्से की वजह से पेट में मरोड़ भी पड़ने लगते हैं। कई बार भूख लगना बंद हो जाती है।

आपने लोगों को कहते सुना होगा कि गुस्से में दिमाग फटने लगता है, लेकिन हकीकत इससे कहीं ज्यादा खतरनाक है। गुस्सा पूरे शरीर को बीमार कर देता है। ये चिंता से भी ज्यादा खतरनाक है, याददाश्त भी कमजोर होती है, यह दिमाग ही नहीं, दिल और पेट भी खराब करता है। यह पुरानी बीमारियों को उभार देता है। बाल्टीमोर के जॉन हॉपकिंस अस्पताल में कार्डियोलॉजिस्ट डॉक्टर इलन शोर विटस्टीन कहते हैं- गुस्से या हताशा में शरीर के न्यूरो हॉर्मोनल सिस्टम पर बहुत ज्यादा दबाव पड़ता है, जो इमरजेंसी तक पहुंचा सकता है। लंबे समय में मौत तक हो सकती है। गुस्सा हमारे कार्डियो वस्कुलर सिस्टम से नर्वस सिस्टम तक को प्रभावित करता है।

हार्टअटैक का बढ़ जाता है खतरा

ब्रोकन हार्ट सिंड्रोम के विशेषज्ञ डॉटर विटस्टीन कहते हैं- गुस्सा धमनियों को संकुचित करता है। पहले से कोई कार्डियोवस्कुलर बीमारी जैसे हाई बीपी या हाई कोलेस्ट्रॉल है तो दिल का दौरा पड़ सकता है। डॉटर विटस्टीन कहते हैं- गुस्से से बीपी बढ़ने, नसों के सिकुड़ने के साथ इून सिस्टम से पचाने वाले सेल निकलते हैं। यह सब एक साथ होता है। इससे धमनियां ॉक हो जाती हैं।

दिमाग सही फैसले नहीं ले पाता

गुस्से में दिमाग सही फैसले नहीं कर पाता। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो में मनोरोग और बिहेवियरल न्यूरोसाइंस के प्रोफेसर डॉटर रोयसे ली कहते हैं- किसी खास वजह से उेजित होने पर दिमाग कुछ कर दिखाने के लिए भी प्रेरित करता है। ली कहते हैं- इंसान गुस्से में वह कह और कर जाता है, जिसे वह पसंद नहीं करता। गुस्से में याददाश्त कमजोर होती है। किसी चीज पर केंद्रित नहीं हो पाते।

रोजाना सूर्योदय से पहले उठना गुस्सा कम करने में होता है सहायक

खुद को फिट रखें और पूरी नींद लें

येल स्कूल ऑफ मेडिसिन में लिनिकल मनोविज्ञानी और प्रोफेसर डॉटर वीलियम बर्ग कहते हैं- गुस्सा रोक पाना हमेशा संभव नहीं होता, लेकिन हम इसे कम कर सकते हैं। ध्यान, प्राणायाम के साथ खुद को फिट रखें और पूरी नींद लें। इससे गुस्सा कम आएगा।

देखो हँस मत देना

मुर्गी : एक अंडा देना, शॉपकीपर : अंडा तो तुम देती हो, मुर्गी : हॉ पर मेरे पति ने कहा है की 4 रु के लिए यों अपना फिगर खराब कर रही हो!

जब घर में बच्चा पैदा होता है, मां: इसकी नाक तो मुझ पर गयी है, बाप : इसकी आंखे मुझ पर गयी हैं, चाचा : इसके बाल मुझ पर गए हैं, और वही बच्चा जवान होकर जब लड़की छेड़ता है, तो सब बोलते है, पता नहीं हरामखोर किस पर गया है।

पापा: नालायक इतनी रात को कहां से आ रहा है? भोलू: अपनी गर्लफ्रेंड से मिलने गया था। पापा: किस लिए? भोलू: हां पापा, 7-8 तो किस ले ही लिए।

ससुर ने दामाद से कहा: 6 साल मे 8 बच्चे.. ये या है? दामाद: मैंने आपसे कहा था गरीब जरूर हुं, पर आपकी बेटी को कभी खाली पेट नहीं रखूंगा!

एक दिन संता अपनी भाभी को पिट रहा था, राह चलते लोगो ने पूछा यो मार रहे हो इस बेचारी को? संता बोला: मेरी भाभी अच्छी औरत नहीं है, लोगो ने पूछा: यों या हुवा? संता बोला: यार मेरे सभी दोस्त मोबाइल पर लगे रहते है, और जिसे भी पुछू तुम लोग किस से बात कर रहे हो? तो सब बोलते है तेरे भाभी से।

कहानी: हाथी और बकरी

एक जंगल में एक हाथी और एक बकरी रहते थे। दोनों पे दोस्त थे। दोनों साथ में मिलकर हर दिन खाने की तलाश करते और साथ में ही खाते थे। एक दिन खाने की तलाश में जंगल से बहुत दूर निकल गए। वहां उन्हें एक तालाब दिखाई दिया। उसी तालाब के किनारे एक बेर का पेड़ था। बेर का पेड़ देखकर हाथी और बकरी बहुत खुश हुए। वह दोनों बेर के पेड़ के पास गए, फिर हाथी ने अपनी सूंड से बेर के पेड़ को जोर से हिलाया और जमीन पर पके हुए बेर गिरने लगे। बकरी जल्दी-जल्दी बेरों को इट्ठा करने लगी। संयोगवश उसी बेर के पेड़ पर एक चिड़िया का घोंसला भी था, जिसमें चिड़िया का एक बच्चा सो रहा था और चिड़िया दाने की खोज में कहीं गई हुई थी। बेर का पेड़ जोर से हिलाने के कारण चिड़िया का बच्चा घोंसले से बाहर तालाब में गिर पड़ा और डूबने लगा। चिड़िया के बच्चे को डूबता देख बकरी तालाब में कूद गई, लेकिन बकरी को तैरना नहीं आता था। इस वजह से वह भी तालाब में डूबने लगी। बकरी को डूबता देख हाथी भी तालाब में कूद गया और उसने चिड़िया के बच्चे और बकरी, दोनों को डूबने से बचा लिया। इतने में चिड़िया भी वहां पर आ गई और वह अपने बच्चे को सही-सलामत देखकर बहुत खुश हुई। उसने हाथी और बकरी को इसी तालाब और बेर के पेड़ के पास रहने के लिए कहा। तब से हाथी और बकरी भी चिड़िया के साथ उस बेर के पेड़ के नीचे रहने लगे। कुछ ही दिनों में चिड़िया का बच्चा बड़ा हो गया। चिड़िया अपने बच्चे के साथ जंगल में घूम कर आती थी और हाथी और बकरी को जंगल में किस पेड़ पर फल लगे हैं, इसकी जानकारी देती थी। इस तरह हाथी, बकरी, और चिड़िया मजे में रहते और खाते-पीते थे।

7 अंतर खोजें

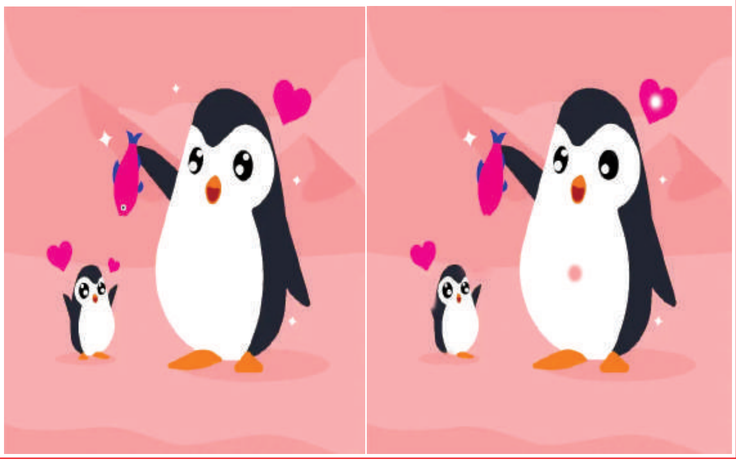

जानिए कैसा रहेगा यह सप्ताह

मेष: आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। कुछ महत्वपूर्ण लोगों से कॉन्टैट हो सकता है। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा। आपके अधूरे काम पूरे हो सकते हैं।

वृषभ: मौज-मस्ती की यात्राएं और सामाजिक मेलजोल आपको खुश रखेंगे और सुकून देंगे। खर्च करते व खुद आगे बढ़ने से बचें, नहीं तो आप खाली जेब लेकर घर लौटेंगे।

मिथुन: बिजनेस में अचानक धन लाभ के योग बन रहे हैं। पार्टनर से आपको सहयोग मिल सकता है। पार्टनर का सुझाव आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

कर्क: अगर आप अपनी रचनात्मकता को बढ़ाना चाहते हैं तो आज का दिन बहुत ही अच्छा है। आपकी व्यापारिक यात्रा लाभदायक रहेगी। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नौकरी व निवेश से लाभ होगा।

सिंह: आज आपका दिन मिला-जुला रहेगा। वर्तमान स्थिति से संतुष्ट रह सकते हैं। बच्चों के साथ आपका समय बेहतर बीतेगा। पैसों से जुड़े बड़े फैसले थोड़ा सोच समझकर लें।

कन्या: काम के बीच-बीच में थोड़ा आराम करें और देर रात तक काम न करें। इस बात में सावधानी बरतें कि आप कि सके साथ आर्थिक लेन-देन कर रहे हैं।

तुला: आपको मेहनत से सफलता मिलेगी। आपकी इच्छाएं पूरी भी हो जाएंगी। प्रमोशन मिलने के पूरे चांस भी बन रहे हैं। किसी भी तरह का मौका न जाने दें।

वृश्चिक: लोग आपसे प्रभावित हो सकते हैं। नए लोगों से दोस्ती के योग बन रहे हैं। घर-परिवार में अपनों के लिए कुछ अच्छा सोचेंगे तो कुछ बेहतर करने की प्रेरणा जगेगी।

धनु: आज आप व्यावहारिक रहेंगे। इस राशि के जो लोग कंट्रशन का कार्य कर रहे हैं, उन्हें कोई बड़ा फायदा होगा। संतान पक्ष से आपको कोई खुशखबरी मिलेगी।

मकर: जब सेहत से जुड़ा मामला हो तो खुद को अनदेखा नहीं करना चाहिए और सावधानी बरतनी चाहिए। अतिरिक्त आय के लिए अपने सृजनात्मक विचारों का सहारा लें।

कु: करियर संबंधी कोई अच्छी खबर भी मिल सकती है। दुश्मनों पर आप हावी रहेंगे। पुराने विवाद भी सुलझाने की कोशिश करेंगे और स्थिति अपने फेवर में कर लेंगे।

मीन: आज नए कार्य करने के अवसर प्राप्त होंगे। कोई नया काम शुरू करने से पहले संबंधित अनुभवी व्यसे सलाह कर लें। आध्यात्म के प्रति आपकी रुचि बढ़ सकती है।

पंत से मिलने हॉस्पिटल पहुंचीं उर्वशी रौतेला! यूजर्स बोले-
ये लड़की पागल है!

दी भारतीय क्रिकेट टीम के धाकड़ बल्लेबाज ऋषभ पंत बीते 30 दिसंबर को एक कार एसीडेंट का शिकार हो गए थे। उसके बाद से ऋषभ का लगातार हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है। हाल ही में ऋषभ पंत को देहरादून से एयरलिट कर मुंबई के कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया है। इस बीच हिंदी सिनेमा की मशहूर एक्ट्रेस उर्वशी रौतेला ने ऋषभ पंत के एडमिटेड हॉस्पिटल की तस्वीर सोशल मीडिया पर शेयर की है।

ऋषभ पंत के कार एसीडेंट के बाद से बॉलीवुड एट्रेस उर्वशी रौतेला कई बार उनके लिए सलमाती की दुआ मांग चुकी हैं। इतना ही नहीं उर्वशी की मां मीरा सिंह रौतेला ने भी ऋषभ पंत के जल्द ठीक होने की कामना की है। मौजूदा समय में ऋषभ पंत का इलाज मुंबई के कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी हॉस्पिटल में जारी है। अब भला इस मौके पर उर्वशी रौतेला सुर्खियां बटोरने से कैसे पीछे रह सकती हैं।

बॉलीवुड मसाला

दरअसल गुरुवार को उर्वशी रौतेला ने इसी हॉस्पिटल की तस्वीर अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर स्टोरी में शेयर किया है, जिसमें ऋषभ का इलाज चल रहा है। ऐसे में अब सोशल मीडिया पर ये बज बन गया है कि या उर्वशी रौतेला ऋषभ पंत से मिलने के लिए हॉस्पिटल पहुंची हैं। साथ ही तमाम यूजर्स इसके चलते उर्वशी रौतेला को ट्रोल कर रहे हैं।

ट्रोल हुईं उर्वशी

सोशल मीडिया पर तमाम लोग उर्वशी रौतेला को इसलिए ट्रोल कर रहे हैं कि उनका मानना है कि बी टाउन एट्रेस क्रिकेट ऋषभ पंत के नाम के जरिए फेम कमाने का काम कर रही है। इस बीच एक ट्विटर यूजर ने ट्वीट कर लिखा है कि- ये लड़की पागल है या। दूसरे यूजर ने लिखा है कि-फेम कमाने का या घटिया तरीका है। मालूम है कि वह एक बड़े हादसे से गुजरे हैं। यह अब मनोरंजन का जरिया नहीं है। बल्कि मानसिक उत्पीड़न का मामला है। इस तरह यूजर्स उर्वशी को जमकर खरी-खोटी सुना रहे हैं।

उर्फी जावेद ने की साजिद की आलोचना

बिग बॉस ओटीटी फेम और सोशल मीडिया सनसनी उर्फी जावेद ने बिग बॉस-16 के हालिया एपिसोड में अर्चना गौतम पर हाथ उठाने के लिए एमसी स्टेन को उकसाने पर फिल्म निर्माता साजिद खान की आलोचना की है। उर्फी ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर यह भी बताया कि साजिद यौन उत्पीड़न के आरोप के बाद अपनी छवि को साफ करने के लिए शो में आए थे। उर्फी ने लिखा, साजिद खान ने सोचा था कि बिग बॉस में आने से छवि साफ हो जाएगी, लेकिन उसने अपना असली रंग दिखा दिया। वह वास्तव में एक महिला प्रतियोगी को मारने के लिए एक साथी प्रतियोगी को उकसा रहे हैं। उसके व्यक्तित्व से बदबू आ रही है। आपको बता दें कि घर में ड्यूटी को लेकर अर्चना और स्टेन के बीच अनबन हो गई। अर्चना ने रैपर पर घर की सफाई नहीं करने का आरोप लगाया था। इसने एक अप्रिय मोड़ ले लिया और बयानबाजी शुरू हो गई। स्टेन तब शो से बाहर निकलना चाहते थे और साजिद ने उन्हें अर्चना को थप्पड़ मारने और फिर शो छोड़ने के लिए कहा। इसी के चलते हुए शो में बहुत बड़ा विवाद तो देखने को मिला ही साथ ही सोशल मीडिया पर भी कई सारे सवाल उठे, ऐसे में उर्फी ने भी इस मुद्दे पर अपनी बात रखी है।

बॉलीवुड मन की बात

फिल्म उद्योग के खिलाफ नफरत मिटाने में मदद करें योगी : शेट्टी

सुनील शेट्टी ने गुरुवार को उर प्रदेश के मुमंत्री योगी आदित्यनाथ से आग्रह किया कि हिंदी फिल्म उद्योग के खिलाफ नफरत को मिटाने में मदद करें और सोशल मीडिया पर बॉलीवुड के बहिष्कार के चलन से मुि दिलाएं। योगी आदित्यनाथ दो दिन की मुंबई यात्रा पर थे। उन्होंने इस दौरान सुनील शेट्टी, सुभाष घई, जैकी श्रॉफ, राजकुमार संतोषी, मनमोहन शेट्टी और बोनी कपूर समेत फिल्म जगत के लोगों से मुलाकात की। इस बैठक का एजेंडा नोएडा फिल्म सिटी में शूटिंग और निवेश की संभावनाओं पर चर्चा करना था। इसी दौरान अभिनेता सुनील शेट्टी ने फिल्म जगत की समस्या को सामने रखा। उन्होंने उर प्रदेश के मुमंत्री से यह अनुरोध भी किया कि बॉलीवुड पर लग रहे ''धे'' को मिटाने में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से हस्तक्षेप कराने में मदद करें। बता दें कि लखनऊ में अगले महीने होने वाले 'ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट' से पहले आदित्यनाथ दो दिन के लिए मुंबई के दौरे पर आए। उर प्रदेश ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट कार्यक्रम से पहले उर प्रदेश के मुमंत्री योगी आदित्यनाथ बुधवार को मुंबई के ताज होटल में इन्वेस्टर्स को संबोधित किया। उन्होंने इस दौरान कहा कि धर्म के प्रदेश से अर्थ के प्रदेश में आए हैं। यूपी में 5 साल पहले लोग अपनी पहचान बताने से कतराते थे लेकिन आज गर्व से वो उर प्रदेश का बताने से सकुचाते नहीं। सीएम योगी ने बॉलीवुड के कई दिग्गजों से मुलाकात की और बैठक में नोएडा फिल्म सिटी में शूटिंग और निवेश की संभावनाओं पर चर्चा की गई। इसी के चलते सुनील शेट्टी ने सीएम योगी से अपील की और कहा कि बॉलीवुड पर लग रहे ''धे'' को मिटाने में पीएम मोदी से हस्तक्षेप कराने में मदद करें।

दुनिया का सबसे छोटा द्वीप, घर से भी छोटा है इसका आकार

आपने दुनिया के खूबसूरत आइलैंड के बारे में सुना होगा। लेकिन दुनिया में बहुत से ऐसे भी आइलैंड हैं जिनके बारे में लोगों को बहुत कम ज्ञात है। ऐसा ही एक आइलैंड हैं जिसे दुनिया का सबसे छोटे आइलैंड का दर्जा प्राप्त है। सुनने में आपको भले ही अजीब लगे लेकिन ये सच है कि दुनिया का सबसे छोटा आइलैंड इतना छोटा है कि वहां सिर्फ एक घर के अलावा सिर्फ एक पेड़ ही नजर आता है। दरअसल, न्यूयॉर्क के एलेजेंड्रिया बाय के पास एक छोटा सा आइलैंड स्थित है। जिसे दुनिया का सबसे छोटा आइलैंड माना जाता है। इस आइलैंड का नाम जस्ट रूम इनफ है। इस आइलैंड का साइज एक टेनिस कोर्ट के बराबर है। इससे भी ज्यादा आश्चर्य की बात यह है कि इस आइलैंड पर सिर्फ एक घर और एक पेड़ ही मौजूद है। जस्ट रूम इनफ आइलैंड इतना छोटा है कि यह एक घर के एक कोने से शुरू होकर उसी घर के दूसरे कोने पर खत्म हो जाता है। बता दें कि पूरी दुनिया में करीब 2000 से ज्यादा आइलैंड मौजूद हैं और ये आइलैंड भी उनमें से एक ही है। इस आइलैंड का आकार सिर्फ 3,300 स्क्वायर फीट जगह में है। इसका नाम गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज है। बता दें कि इस आइलैंड से पहले बिशप रॉक को दुनिया का सबसे छोटा आइलैंड माना जाता था। लेकिन जस्ट रूम इनफ आइलैंड अब दुनिया का सबसे छोटा आइलैंड बन गया है। जस्ट रूम इनफ आइलैंड बिशप आइलैंड से आधे के बराबर है। पहले इस आइलैंड को हब आइलैंड के नाम से जाना जाता था लेकिन साल 1950 में इस आइलैंड को एक परिवार ने खरीद लिया। उसके बाद उस परिवार के लोगों ने यहां पर एक छोटा सा घर बनाकर एक पेड़ लगवा दिया। कुछ समय बाद उन्होंने इस आइलैंड का नाम बदल कर जस्ट रूम इनफ रख दिया।

अजब-गजब | वर्ल्ड लेजिनेस डे के दिन होता है इस पर्व का आयोजन

आलसी लोगों का लगता है मेला सोने की होती है प्रतियोगिता

दुनिया में आलसी लोगों की कमी नहीं है। कुछ लोग तो इतने आलसी होते हैं कि, उन्हें आप पानी डाल कर भी नहीं जगा सकते। तेज बारिश में भी उन्हें नहीं जगा सकती। आलसियों का ऐसा ही कुछ नजारा देखने को मिलता है कोलंबिया में जहां दुनियाभर के आलसी इकट्ठे होते हैं और सड़कों पर जहां तहां सोते रहते हैं।

यहां आपको कोई बीच राह में बिस्तर लगाए सोता नजर आएगा तो को किसी पेड़ के नीचे। दरअसल, यह सब वर्ल्ड लेजिनेस डे के दिन नजर आता है। ये दिन आपके लिए अजीब जरूर हो सकता है। मगर यकीन मानिए इस दिन को सेलिब्रेट करने के लिए यहां पूरी दुनियाभर के आलसी आते हैं और इस पर्व का हिस्सा बनते हैं। इस बार ये दिन बीती 19 अगस्त यानी रविवार को कोलंबिया के इतागुई शहर में मनाया गया।

इस दौरान लोग अपने साथ में गद्दे, बिस्तर लेकर आए। इस दौरान लोगों ने अपने बिस्तर रंगबिरंगी लड़ियां भी सजाई और सड़कों पर सोकर इस दिन का आनंद उठाया। बता दें कि ये एक ऐसा दिन है जिस पर इतागुई शहर आलसियों से भर जाता है। कह सकते हैं कि इस दिन लोग पूरा दिन बिस्तर पर आलस में डूबकर बिता सकते हैं। बता दें कि इस सेलीब्रेशन को मनाने के पीछे एक खास वजह है। जो बेहद रोचक है। दरअसल, कोलंबिया के लोग तनाव से लड़ने के लिए हर साल आलस का दिन मनाते हैं। इस बार भी कोलंबिया में लोग अपने गद्दे, बिस्तर लेकर सड़कों पर सोते दिखे। पूरे दिन आलस में डूबे रहने का यह खास दिन कोई नया नहीं बल्कि 1985 से हर साल मनाया जा रहा है। बता दें कि कोलंबिया के उर पश्चिम में स्थित इतागुई शहर की आबादी करीब 2 लाख है। आज से 38 साल पहले एक निवासी मारियो मोंटोया को यह विचार आया था कि, शहर में लोगों के पास आराम का एक दिन होना चाहिए। आलसियों के इस दिन में कुछ प्रतियोगिताएं भी होती हैं, जैसे कि सका पजामा सबसे अच्छा दिख रहा है और कौन सबसे तेज बिस्तर पर पहुंचता है।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक-सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।